फ़ज़ाइले आमाल

भाग-2

फ़ज़ाइले सदक़ात

फ़ज़ाइले हज

शैख़ुल हदीस
मौलाना मुहम्मद ज़करिया (रह.) कान्धल्वी

وَاَنْفِقُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ

तुम लोग अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किया करो,
और अपने आप को अपने हाथों हलाकत में न डालो

फ़ज़ाइले सदक़ात

हिस्सा अव्वल

मुअल्लिफ़

हज़रत अल हाफ़िज़, अल-हाज्ज, अल मुहद्दिस
शेखुलहदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब (रह.)
मज़ाहिरूल उलूम (सहारनपुर)

प्रकाशक

नसीर बुक डिपो (रजि.)

1, अज़ीज़ा बिल्डिंग हज़रत निज़ामुद्दीन
नई दिल्ली-110013
फोन : 011-24350995, 55652620

तफ़्सीलात

सर्वाधिक प्रकाशकाधीन ©

नाम किताब : फ़ज़ाइले आमाल (दूसरा हिस्सा)
(फ़ज़ाइले सदक़ात मुकम्मल व फ़ज़ाइले हज)

लेखक : शैख़ुल हदीस हज़रत मौलाना मु० ज़करिया साहिब रह०

तस्हीह् : मौलाना मु० इमरान क़ासमी (मुज़फ़्फ़र नगर)

कम्पोज़िंग : लेज़र कम्प्यूटर सर्विसेज़, दिल्ली-6 फ़ोन: 23217840

प्रथम संस्करण : अगस्त 2004

क़ीमत :

प्रकाशक
नसीर बुक डिपो
निज़ामुद्दीन, नई दिल्ली-110013
☎ 24350995, 55652620

विषय सूची

फ़ज़ाइले सदक़ात हिस्सा अव्वल

क्र.	क्या?	कहा?
1.	पेशे लफ़्ज़	1
2.	पहली फ़स्ल माल खर्च करने के फ़ज़ाइल	2
3.	दूसरी फ़स्ल बुख़्ल की मज़म्मत में	171
4.	तीसरी फ़स्ल सिला-रहमी	245
5.	चौथी फ़स्ल ज़कात की ताकीद	290
6.	पांचवीं फ़स्ल ज़कात न देने पर वअ़ीदें	311

विषय सूची

फ़ज़ाइले सदक़ात हिस्सा दोम

क्र.	क्या?	कहा?
1.	छठी फस्ल जुहद व क़नाअ़त और सवाल नं करने वालों की तर्ग़ीब में	361
2.	सातवीं फस्ल ज़ाहिदों और अल्लाह के रास्ते में खर्च करने वालों की सत्तर हिकायात	675

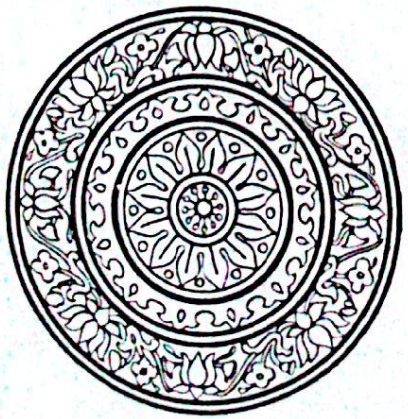

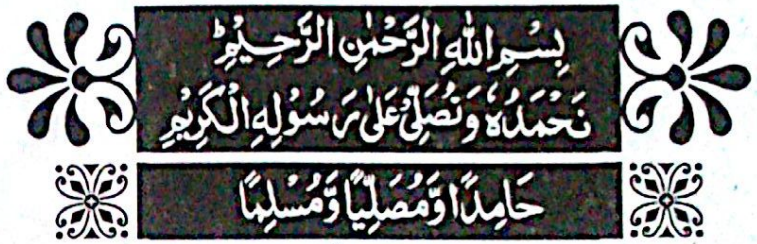

पेश लफ़्ज़

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

नह्म-दुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम०
हामिदन व मुसल्लियन व मुसल्लिमन०

अम्मा बअ्दु :- ये कुछ पन्ने अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल में हैं जिनके मुताल्लिक़ अपने पहले रिसाले फ़ज़ाइले हज के शुरू में लिख चुका हूँ कि चचा जान (यानी हज़रते अक़दस मौलाना शाह मुहम्मद इल्यास) नव्वरल्लाहु मर्क़ द हू को इस रिसाले का बहुत एहतिमाम था और अपनी जिंदगी के आख़िरी दिनों में बार बार इसकी ताकीद फरमायी और एक मर्तबा जबकि अस्र की नमाज़ खड़ी हो रही थी तक्बीर होते हुए सफ़ से आगे मुँह निकालकर इस ना पाक को हुक्म फरमाया कि देखो, इसको भूलना नहीं। उस ज़माने में चचा जान बीमारी की वजह से खुद इमामत न करते थे, इसलिये मुक़्तदियों की सफ़ ही में वह भी शरीक थे। इतने इस्रार और ताकीद के बावजूद अपनी कोताही से इसमें देरी होती ही चली गयी और न सिर्फ़ देरी बल्कि तक़रीबन इल्तवा (स्थगन) ही हो गया था कि मुक़द्दरात से शव्वाल 1366 हि० में बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन रह० का लम्बा क़ियाम पेश आया जैसा कि रिसाला फ़ज़ाइले हज के शुरू में लिख चुका हूँ और इस रिसाले के इख़्तिताम के बाद भी जब सहारनपुर वापसी की कोई सूरत पैदा न हुई तो 24 शव्वाल 1366 हि० बुध को इस रिसाले की शुरूआत कर दी गयी। हक़ तआला शानुहू अपने उस लुत्फ़ व इन्आम और करम से जो मेरी गंदगियों के बावजूद दीन और दुनिया दोनों के एतबार से दिन ब दिन ज़्यादा हैं, इसको तक्मील तक पहुँचा कर क़ुबूल फ़रमाए -

व मा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाहि अलैहि तवक्कल्तु व इलैहि उनीबु०

इस रिसाले में सात फ़स्लें लिखने का ख़्याल है -

1. पहली फ़स्ल में अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल,

2. दूसरी फ़स्ल में बुख़्ल की मज़म्मत, (कंजूसी की बुराई)

3. तीसरी फ़स्ल में सिलारहमी का खुसूसी एहतिमाम,

4. चौथी फ़स्ल में ज़कात का वजूब और फ़ज़ाइल,

5. पांचवी फ़स्ल में ज़कात अदा न करने पर वईदें,

6. छठी फ़स्ल में ज़ुहद व क़नाअत और सवाल न करने की तर्ग़ीब,

7. सातवीं फ़स्ल में ज़ाहिदों और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने वालों की हिकायात (वाकिआत)।

पहली फ़स्ल

माल ख़र्च करने के फ़ज़ाइल में

अल्लाह पाक के कलाम और उसके सच्चे रसूल सैय्यिदुल बशर के इर्शादात में ख़र्च करने की तर्ग़ीब और उसके फ़ज़ाइल इतनी कसरत से आए हैं कि हद नहीं, उनको देखने से मालूम होता है कि पैसा पास रखने की चीज़ है ही नहीं। यह पैदा ही इसलिये हुआ है कि इसको अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किया जाए। जितनी कसरत से इस मस्अले पर इर्शादात हैं, उनका दसवां बीसवां हिस्सा भी जमा करना मुश्किल है। नमूने के तौर पर कुछ आयात और कुछ हदीसों का तर्जुमा अपनी आदत के मुवाफ़िक पेश करता हूँ।

आयात

(1) هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ○ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ○ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ○ (بقرہ ع۱)

1. (यह किताब यानी क़ुरआन शरीफ़) रास्ता बताने वाली है ख़ुदा से डरने वालों को जो यक़ीन लाते हैं ग़ैब की चीज़ों पर और क़ायम रखते (पढ़ते) हैं नमाज़ को और जो कुछ हमने उनको दिया है, उसमें से ख़र्च करते हैं और वे लोग ऐसे हैं जो यक़ीन रखते हैं ईमान लाते हैं (उस किताब पर भी जो आप पर नाज़िल की गयी और उन किताबों पर भी जो आपसे पहले नाज़िल की गयीं और आख़िरत पर भी वे यक़ीन रखते हैं। यही लोग उस सही रास्ते पर हैं जो उनके रब की तरफ़ से मिला है। और यही लोग फ़लाह (कामयाबी) को पहुंचने वाले हैं।

(बक़र: रूकूअ 1,)

फ़ायदा - इस आयते शरीफ़ा में कई मज़मून क़ाबिले ग़ौर हैं -

(अ) रास्ता बताने वाली है, ख़ुदा से डरने वालों को यानी जिसको मालिक का ख़ौफ़ न हो, मालिक को मालिक न जानता हो, वह अपने पैदा करने वाले से जाहिल हो, उसको क़ुरआन पाक का बताया हुआ रास्ता कब नज़र आ सकता है, रास्ता उसी को नज़र आता है जिसमें देखने की सलाहियत भी हो, जिसमें देखने का ज़रिया आँख ही न हो, वह क्या देखेगा, इसी तरह जिसके दिल में मालिक का ख़ौफ़ ही न हो, वह मालिक के हुक्म की क्या परवाह करेगा।

(ब) नमाज़ को क़ायम रखना यह है कि उसको उसके आदाब और शर्तों की रियायत रखते हुए पाबंदी और एहतिमाम से अदा करे जिस का तफ़्सीली बयान रिसाला 'फ़ज़ाइले नमाज़"[1] में गुज़र चुका है, उसमें हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का यह इर्शाद नक़ल किया गया है कि नमाज़ को क़ायम करने से मुराद यह है कि उसके रूकूअ् व सजदों को अच्छी तरह अदा करे। पूरी तरह मुतवज्जह रहे और ख़ुशूअ् के साथ पढ़े।

क़तादा रज़ि० कहते हैं कि नमाज़ का क़ायम करना उसके औक़ात की हिफ़ाज़त रखना और वुज़ू का और रकूअ् व सजदों का अच्छी तरह अदा करना है।

(स) फ़लाह को पहुंचना बहुत ऊंची चीज़ है। फ़लाह का लफ़्ज़ जहां कहीं भी आता है, वह अपने मफ़्हूम (मतलब) में दीन और दुनिया की बहबूद और कामियाबी को लिए हुए होता है।

इमाम राग़िब रह० ने लिखा है कि दुन्यवी फ़लाह उन ख़ूबियों का हासिल कर लेना है जिनसे दुन्यवी ज़िंदगी बेहतरीन बन जाए और वह बक़ा और ग़िना (मालदारी) और इज़्ज़त हैं और उख़्रवी फ़लाह चार चीज़ें हैं -

1. वह बक़ा जिसको कभी फ़ना न हो,

1. फ़ज़ाइले नमाज़।

2. वह मालदारी जिसमें फ़क़्र का शुबह भी न हो,

3. वह इज़्ज़त जिसमें किसी क़िस्म की ज़िल्लत न हो,

4. वह इल्म जिसमें जहल का दख़ल न हो और जब फ़लाह को मुतलक़ बोला गया तो उसमें दीन व दुनिया दोनों की फ़लाह आ गयी।

(٢) لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُوَلُّوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ
مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ وَآتَى الْمَالَ
عَلَىٰ حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ
وَفِي الرِّقَابِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ ج (بقرہ ع ۲۲)

2. सारा कमाल इसी में नहीं है कि तुम अपना मुंह मशरिक़ (पूरब) की तरफ़ कर लो या मग़रिब (पश्चिम) की, लेकिन असल कमाल तो यह है कि कोई शख़्स अल्लाह पर ईमान लाये और क़ियामत के दिन पर और फ़रिश्तों पर और अल्लाह की किताबों पर और सब पैग़म्बरों पर और अल्लाह की मुहब्बत में माल देता हो अपने रिश्तेदारों को और यतीमों को और ग़रीबों को और मुसाफ़िरों को और लाचारी में सवाल करने वालों को और क़ैदियों और गुलामों की गरदन छुड़ाने में ख़र्च करता हो और नमाज़ को क़ायम रखता हो और ज़कात को अदा करता हो कि असल कमालात ये चीज़ें हैं।

आयते शरीफ़ में उनकी कुछ और सिफ़ात का ज़िक्र फ़रमा कर इर्शाद है कि यही लोग सच्चे हैं और यही लोग मुत्तक़ी हैं।

फ़ायदा - हज़रत क़तादा रज़ि॰ कहते हैं कि यहूद मग़रिब की तरफ़ नमाज़ पढ़ते थे और नसारा (ईसाई) मशरिक़ की तरफ़ नमाज़ पढ़ते थे, इस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई और भी कई हज़रात से इस क़िस्म का मज़मून नक़ल किया गया है। *(दुर्रे मंसूर)*

इमाम जस्सास रह॰ ने लिखा है कि आयते शरीफ़ा में यहूद और नसारा पर रद्द है कि जब उन्होंने क़िब्ला के मंसूख़ होने यानि बैतुल मुक़द्दस के बजाए काबा को क़िब्ला क़रार देने पर एतराज़ किया तो हक़ तआला शानुहू ने यह आयत नाज़िल फ़रमायी कि नेकी अल्लाह की इताअत में है, बग़ैर उसकी इताअत (फ़रमांबरदारी) के मशरिक़ व मग़रिब की तवज्जोह कोई चीज़ नहीं है। *(अह्कामुल क़ुरआन)*

अल्लाह की मुहब्बत में माल देता हो का यह मतलब है कि इन चीज़ों में अल्लाह जल्ल शानुहू की मुहब्बत और ख़ुशनूदी की वजह से ख़र्च करे। नाम व दिखावे और अपनी शोहरत, इज़्ज़त की वजह से ख़र्च न करे कि इस इरादे से ख़र्च करना नेकी बर्बाद करना और गुनाह सर लेने के मिस्दाक़ है। अपना माल भी ख़र्च किया और अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां बजाए सवाब के गुनाह हुआ।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हक़ तआला शानुहू तुम्हारी सूरतों और मालों की तरफ़ नहीं देखते कि कितना ख़र्च किया बल्कि तुम्हारे आमाल और तुम्हारे दिलों की तरफ़ देखते हैं (कि किस नियत और किस इरादे से ख़र्च किया।) *(मिश्कात)*

एक और हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मुझे तुम पर बहुत ज़्यादा ख़ौफ़ शिर्के असग़र (छोटे शिर्क) का है। सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! शिर्के असग़र क्या है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, दिखावे के लिये अमल करना।

हदीसों में बहुत कसरत से दिखावे के लिए ख़र्च करने पर तंबीह की गयी है जो आइन्दा आएगी। यह तर्जुमा इस सूरत में है कि आयते शरीफ़ा में अल्लाह की मुहब्बत में दुनियां मुराद हो।

कुछ उलमा ने ख़र्च करने की मुहब्बत का तर्जुमा किया है यानी जो ख़र्च किया हो, उस पर मसरूर (ख़ुश) हो। यह न हो कि उस वक़्त तो ख़र्च कर दिया, फिर उस पर क़लक़ (अफ़सोस) हो रहा है कि मैंने क्यों ख़र्च कर दिया, कैसी बेवक़ूफ़ी हुई, रूपया कम हो गया वग़ैरह वग़ैरह। *(अह्कामुल क़ुरआन)*

और अक्सर उलमा ने माल की मुहब्बत का तर्जुमा किया है, यानि बावजूद माल की मुहब्बत के इन मौक़ों में ख़र्च करो। एक हदीस में है, कि किसी शख़्स ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! माल की मुहब्बत का क्या मतलब है? माल से तो हर एक को मुहब्बत होती है, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जब तू माल ख़र्च करे तो उस वक़्त तेरा दिल तेरी अपनी ज़रूरतें जताए और अपनी हाजत का डर दिल में पैदा हो कि उम्र अभी बहुत बाक़ी है, मुझे एहतियाज न हो जाये।

एक हदीस में है, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, बेहतरीन सदक़ा यह है कि तू ऐसे वक़्त में ख़र्च करे, जब तन्दरुस्त हो, अपनी ज़िंदगी और बहुत ज़माने तक दुनिया में रहने की उम्मीद हो। ऐसा न

कर कि सदक़ा करने को टालता रहे यहां तक कि जब दम निकलने लगे और मौत का वक़्त क़रीब आ जाये तो कहने लगे, इतना फ़लां को दिया जाये और इतना फ़लानी जगह दिया जाये कि अब तो वह फ़लां का हो गया।

(दुर्रे मंसूर)

मतलब यह है कि जब अपने से मायूसी हो गयी और अपनी ज़रूरत और हाजत का डर न रहा तो आपने कहना शुरू कर दिया कि इतना फ़लां मस्जिद में, इतना फ़लां मदरसे में, हालांकि अब वह गोया वारिस का माल बन गया। अब हलवाई की दुकान पर नाना जी की फ़ातिहा है। जब तक अपनी ज़रूरतें मौजूद थीं तब तो ख़र्च करने की तौफ़ीक़ न हुई, अब जबकि वह दूसरे के यानी वारिस के पास जाने लगा तो आपको अल्लाह वास्ते देने का जज़्बा पैदा हुआ। इसी वास्ते शरीअते पाक ने हुक्म दे दिया कि मरते वक़्त का सदक़ा एक तिहाई माल में असर कर सकता है। अगर कोई उस वक़्त सारा माल भी सदक़ा करके मर जाये तो वारिसों की इजाज़त के बग़ैर तिहाई से ज़्यादा में उसकी वसीयत मोतबर न होगी। इस आयते शरीफ़ा में माल को यतामा (यतीमों), मसाकीन वग़ैरह पर ख़र्च करने को मुस्तक़िल तौर पर ज़िक्र फ़रमाया है और आख़िर में ज़कात को अलग से ज़िक्र फ़रमाया है, जिससे मालूम होता है कि ये ख़र्चे ज़कात के अलावा बाक़ी माल में से हैं। इसका बयान अहादीस के तहत में नं॰ 1 पर आ रहा है।

(٣) وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ وَاَحْسِنُوْا اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ○ (بقره ع ٢٤)

3. 'और तुम लोग अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किया करो और अपने आपको अपने हाथों तबाही में न डालो और (ख़र्च वग़ैरह को) अच्छी तरह किया करो। बेशक हक़ ताआला महबूब रखते हैं अच्छी तरह काम करने वालों को'।

फ़ायदा- हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि "अपने आपको हलाकत में न डालो, यह फ़क़्र (तंगी और ग़ुरबत) के डर से अल्लाह के रास्ते में ख़र्च का छोड़ देना है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हलाकत में डालना यह नहीं है कि आदमी अल्लाह के रास्ते में क़त्ल हो जाए, बल्कि यह कि अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने से रूक जाना है।

हज़रत ज़ह्हाक बिन ज़ुबैर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अंसार रज़ि॰ अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किया करते थे और सदक़ा किया करते थे। एक साल क़हत हो गया। उनके ख़्यालात बुरे हो गये और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना छोड़ दिया। इस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई।

हज़रत असलम रज़ि॰ कहते हैं कि हम कुस्तुन्तुनिया की जंग में शरीक थे, कुफ़्फ़ार की बहुत बड़ी जमाअत मुक़ाबले पर आ गयी। मुसलमानों में से एक शख़्स तलवार लेकर उनकी सफ़ में घुस गया। दूसरे मुसलमानों ने शोर किया, कि अपने आप को हलाकत में डाल दिया। हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि॰ भी इस जंग में शरीक थे, वह खड़े हुए और इर्शाद फ़रमाया कि यह अपने आप को हलाकत में डालना नहीं है। तुम इस आयते शरीफ़ा का मतलब यह बताते हो, यह आयत तो हमारे बारे में नाज़िल हुई। बात यह हुई थी कि जब इस्लाम को तरक़्क़ी होने लगी और दीन के मददगार बहुत से पैदा हो गए तो हमारी यानी अंसार की चुपके चुपके यह राय हुई कि अब अल्लाह जल्ल शानुहू ने इस्लाम को ग़लबा तो अता फ़रमा ही दिया और लोगों में दीन के मददगार बहुत से पैदा हो गये, हमारे माल-खेतियां वग़ैरह मुद्दत से ख़बरगीरी पूरी न हो सकने की वजह से बर्बाद हो रही हैं। हम उनकी ख़बरगीरी और इस्लाह कर लें, इस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई और हलाकत में अपने को डालना अपने मालों की इस्लाह में मशग़ूल हो जाना और जिहाद को छोड़ देना है।' *(दुर्रे मंसूर)*

(٤) وَيَسْئَلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ قُلِ الْعَفْوَ (بقره ع ٢٧)

4. 'लोग आपसे पूछते हैं कि ख़ैरात में कितना ख़र्च करें, आप फ़रमा दीजिए कि जितना (ज़रूरत से) ज़्यादा हो।'

(बक़र: रूकूअ़ 27)

फ़ायदा - यानी माल तो ख़र्च ही करने के वास्ते है जितनी अपनी ज़रूरत हो उसके मुवाफ़िक़ रख कर जो ज़ायद हो वह ख़र्च कर दे। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अपने अह्ल व अयाल (घर वालों व बाल, बच्चों) के ख़र्च से जो बचे, वह अफ़्व (ज़रूरत से ज़्यादा) है।

हज़रत अबू यमामा रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि ऐ आदमी ! जो तुझ से ज़ायद है उसको तू ख़र्च कर दे, यह बेहतर है तेरे लिए और तू उसको रोक कर रखे यह तेरे लिये बुरा है और ज़रूरत के लायक़ पर कोई मलामत नहीं। और ख़र्च करने में उन लोगों से शुरूआत कर

जो तेरे अयाल में हैं और ऊंचा हाथ यानी देने वाला हाथ बेहतर है उस हाथ से जो नीचे हो (यानी लेने के लिए फैला हुआ हो।)

हज़रत अता रज़ि॰ से भी यही नक़ल किया गया कि अफ़्व से मुराद ज़रूरत से ज़ायद है। *(दुर्रे मंसूर)*

हज़रत अबू सईद रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसके पास सवारी ज़ायद हो, वह ऐसे शख़्स को सवारी दे जिसके पास सवारी नहीं है और जिसके पास तोशा ज़ायद हो वह ऐसे शख़्स को तोशा दे जिसके पास तोशा न हो। (हुज़ूर सल्ल॰ ने इस क़दर एहतिमाम से यह बात फ़रमाई कि) हमें यह गुमान होने लगा कि किसी शख़्स का अपने किसी ऐसे माल में हक़ ही नहीं है जो उसकी ज़रूरत से ज़ायद हो। *(अबू दाऊद)*

और कमाल का दर्जा है भी यही कि आदमी की अपनी वाक़ई ज़रूरत से ज़ायद जो चीज़ है वह ख़र्च ही करने के वास्ते है, जमा करके रखने के वास्ते नहीं है।

कुछ उलमा ने अफ़्व का तर्जुमा सह्ल का किया है यानी जितना आसानी से ख़र्च कर सके कि उसको ख़र्च करने से खुद परेशान हो कर दुन्यवी तक्लीफ़ में मुब्तला न हो और दूसरे का हक़ ज़ाया होने से आख़िरत की तक्लीफ़ में मुब्तला न हो।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि कुछ आदमी इस तरह सदक़ा करते थे कि अपने खाने को भी उनके पास न रहता था, यहां तक कि दूसरे लोगों को उन पर सदक़ा करने की नौबत आ जाती थी। इस पर यह आयत नाज़िल हुई।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स मस्जिद में तशरीफ़ लाये। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी हालत देखकर लोगों से कपड़ा ख़ैरात करने को इर्शाद फ़रमाया, बहुत से कपड़े चंदे में जमा हो गये। हुज़ूर सल्ल॰ ने उनमें से दो कपड़े उन साहब को अता फ़रमा दिए। उसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने सदक़ा करने की तर्ग़ीब दी और लोगों ने सदक़े का माल दिया तो उन साहब ने भी दो कपड़ों में से एक सदक़े में दे दिया, तो हुज़ूर सल्ल॰ ने नाराज़ी का इज़्हार फ़रमाया और उनका कपड़ा वापस फ़रमा दिया। *(दुर्रे मंसूर)*

क़ुरआन पाक में अपनी ज़रूरत के बावजूद ख़र्च करने की तर्ग़ीब भी

आई है, लेकिन यह उन्हीं लोगों के लिए है जो इसको ख़ुशदिली से बर्दाश्त कर सकते हों, उनके दिलों में वाक़ई तौर पर आख़िरत की अहमियत दुनिया पर ग़ालिब आ गयी हो जैसे कि आयात के सिलसिले में नं॰ 38 पर यह मज़मून तफ़्सील से आ रहा है।

(۵) مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ۭ
وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ ۠ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ○ (بقرہ ع ۳۲)

5. कौन है ऐसा शख़्स जो अल्लाह जल्ल शानुहू को क़र्ज़ दे अच्छी तरह क़र्ज़ देना, फिर अल्लाह तआला उसको बढ़ा कर बहुत ज़्यादा कर दे (और ख़र्च करने से तंगी का ख़ौफ़ न करो) कि अल्लाह जल्ल शानुहू ही तंगी और फ़राख़ी करते हैं। (उसी के क़ब्ज़े में है।) और उसी की तरफ़ मरने के बाद लौटाए जाओगे।

फ़ायदा:- अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने को क़र्ज़ से इसलिए ताबीर किया गया है कि जैसे क़र्ज़ की अदाएगी और वापसी ज़रूर होती है, इसी तरह अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने का अज्र व सवाब और बदला ज़रूर मिलता है, इसलिये उसको क़र्ज़ से ताबीर किया।

हज़रत उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला को क़र्ज़ देने से अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना मुराद है।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई तो हज़रत अबुद्दहदाह अंसारी रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! अल्लाह जल्ल शानुहू हमसे क़र्ज़ मांगते हैं हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, बेशक, वह अर्ज़ करने लगे अपना दस्ते मुबारक मुझे पकड़ा दीजिए ताकि मैं आप के दस्ते मुबारक पर एक अह्द करूं। हुज़ूर सल्ल॰ ने अपना हाथ बढ़ाया। उन्होंने मुआहदे के तौर पर हुज़ूर सल्ल॰ का हाथ पकड़ कर अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मैं ने अपना बाग़ अपने अल्लाह को क़र्ज़ दे दिया। उनके बाग़ में छः सौ दरख़्त खजूरों के थे और उसी बाग़ में उनके बीवी बच्चे रहते थे, यहां से उठकर फिर अपने बाग़ में गये और अपनी बीवी उम्मे दहदाह रज़ि॰ से आवाज़ देकर कहा कि चलो इस बाग़ से निकल चलो, यह बाग़ मैं ने अपने रब को दे दिया।

दूसरी हदीस में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने उस बाग़ को कुछ यतीमों पर तक़्सीम कर दिया।

एक हदीस में है कि जब यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई -

मन् जा अ बिल् ह स नति (आयत)

'जो एक नेकी करे उसको दस गुना सवाब मिलेगा', तो हुज़ूर सल्ल॰ ने दुआ की कि या अल्लाह ! मेरी उम्मत का सवाब इससे भी ज़्यादा कर दे। उसके बाद यह आयत -

'मन् ज़ल्लज़ी युक़्रिज़ुल्ला-ह'

नाज़िल हुई। हुज़ूर सल्ल॰ ने फिर दुआ की, या अल्लाह ! मेरी उम्मत का सवाब बढ़ा दे, फिर

म-स-लुल्ल-ज़ी-न युन्फ़िक़ू-न (आयत)

जो नम्बर 7 पर आ रही है नाज़िल हुई। हुज़ूर सल्ल॰ ने फिर दुआ की, या अल्लाह मेरी उम्मत का सवाब बढ़ा दे, इस पर

इन् न मा युवफ़्फ़स्साबिरू न अज् र हुम बिग़ैरि हिसाब॰ (सूरः ज़ुमर रूकूअ् 2) नाज़िल हुई कि सब्र करने वालों को उनका सवाब पूरा-पूरा दिया जायेगा, जो बे अंदाज़ा और बेशुमार होगा।

एक हदीस में है कि एक फ़रिश्ता निदा (आवाज़) करता है कि, कौन है जो आज क़र्ज़ दे और कल को पूरा बदला ले ले।

एक और हदीस में है कि अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमाते हैं, ऐ आदमी अपना ख़ज़ाना मेरे पास अमानत रख दे, न उसमें आग लगने का अंदेशा है, न ग़र्क़ हो जाने का, न चोरी का। ऐसे वक़्त में वह तुझ को पूरा का पूरा वापस करूँगा जिस वक़्त तुझे उसकी इंतिहाई ज़रूरत होगी। *(दुर्रे मंसूर)*

(٦) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خُلَّةٌ وَلَا شَفَاعَةٌ (بقره ع ٣٤)

6. ऐ ईमान वालो ! ख़र्च कर लो उन चीज़ों में से जो हमने तुमको दी हैं, इसके पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें न तो ख़रीद व फ़रोख़्त हो सकती है, न दोस्ती होगी, न किसी की (अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर) सिफ़ारिश होगी।

फ़ायदा:- यानी उस दिन न तो ख़रीद व फ़रोख़्त है कि कोई उस दिन दूसरों की नेकियां ख़रीद ले, न दोस्ती है कि ताल्लुक़ात में कोई दूसरे से नेकियां मांग ले, न बग़ैर इजाज़त के सिफ़ारिश का किसी को हक़ है कि अपनी तरफ़

से ख़ुशामद करके सिफ़ारिश ही करा ले, ग़रज़ जितने असबाब दूसरे से मदद हासिल करने के हुआ करते हैं, वह सभी उस दिन मौजूद न होंगे, उस दिन के वास्ते कुछ करना है तो आज का दिन है। जो बोना है बो लिया जाये उस दिन तो खेती के काटने ही का दिन है जो बोया गया है, वह काट लिया जाएगा, ग़ल्ला हो या फूल, कांटे हों या ईंधन। हर शख़्स ख़ुद ही ग़ौर कर ले कि वह क्या बो रहा है।

(٧) مَثَلُ الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۗ وَاللَّهُ يُضَاعِفُ لِمَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ○ (بقره ع ٣٦)

7. जो लोग अल्लाह के रास्ते में (यानि ख़ैर के कामों में) अपने मालों को ख़र्च करते हैं, उनकी मिसाल ऐसी है जैसा कि एक दाना हो जिसमें सात बालें उगी हों और हर बाल में सौ दाने हों। (तो एक दाने से सात सौ दाने मिल गये) और अल्लाह जल्ल शानुहू जिस को चाहे ज़्यादा अता फ़रमा देते हैं। अल्लाह जल्ल शानुहू बड़ी वुसअत वाले हैं। (उनके यहां किसी चीज़ की कमी नहीं) और जानने वाले हैं (कि ख़र्च करने वाले की नीयत का हाल भी उन को ख़ूब मालूम है।)

फ़ायदा:- एक हदीस में आया है कि आमाल छः क़िस्म के हैं और आदमी चार क़िस्म के हैं। आमाल की छः क़िस्में ये हैं कि दो अमल तो वाजिब करने वाले हैं और दो अमल बराबर सराबर हैं और एक अमल दस गुना सवाब रखता है और एक अमल सात सौ गुना सवाब रखता है। जो वाजिब करने वाले हैं। वे तो ये हैं कि जो शख़्स इस हालत में मरे कि शिर्क न करता हो, वह जन्नत में दाख़िल होकर रहेगा और जो ऐसी हालत में मरे कि शिर्क करता हो वह जहन्नम में दाख़िल होकर रहेगा और बराबर सराबर ये हैं कि जो शख़्स किसी नेकी का इरादा करे और अमल न कर सके, उसको एक सवाब मिलता है और जो गुनाह करे उसको एक बदला मिलता है और जो शख़्स कोई नेकी करे उसको दस गुना सवाब मिलता है और जो अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करे उसको हर ख़र्च का सात सौ गुना सवाब मिलता है और आदमी चार तरह के हैं-

एक - वे लोग हैं जिन पर दुनिया में भी वुसअत है, आख़िरत में भी,

दूसरे- वे जिन पर दुनिया में वुसअत, आख़िरत में तंगी,

तीसरे - वे जिन पर दुनिया में तंगी, आख़िरत में वुसअत,

चौथे - वे जिन पर दुनिया में भी तंगी और आख़िरत में भी तंगी,

(कंज़ुल उम्माल)

कि यहां के फ़क़्र के साथ आमाल भी ख़राब हुए, जिन की वजह से वहां भी कुछ न मिला। दुनिया और आख़िरत दोनों ही बर्बाद हो गयीं।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो शख़्स एक खजूर के बराबर भी सदक़ा करे बशर्ते कि पाक माल से हो, ख़बीस माल न हो, इसलिये कि हक़ तआला शानुहू तय्यब माल ही को क़ुबूल करते हैं, तो हक़ तआला उस सदक़े की परवरिश करते हैं जैसा कि तुम लोग अपने बछेरे की परवरिश करते हो, हत्ता कि वह सदक़ा बढ़ते बढ़ते पहाड़ के बराबर हो जाता है। *(मिश्कात शरीफ़)*

एक और हदीस में है कि जो शख़्स एक खजूर अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करता है, हक़ तआला शानुहू उसके सवाब को इतना बढ़ाते हैं कि वह उहद पहाड़ से बड़ा हो जाता है। उहद का पहाड़ मदीना तय्यबा का बहुत बड़ा पहाड़ है। इस सूरत में सात सौ से बहुत ज़्यादा अज्र व सवाब हो जाता है।

एक हदीस में आया है कि जब यह सात सौ गुने वाली आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह जल्ल शानुहू से सवाब के ज़्यादा होने की दुआ की, इस पर पहली आयत नं॰ 5 वाली नाज़िल हुई। *(बयानुल क़ुरआन)*

इस क़ौल के मुवाफ़िक़ इस आयते शरीफ़ा का नुज़ूले मुक़द्दम हुआ, दूसरी हदीस में इसका उलटा आया है, जैसा कि पहले नं॰ 5 के तहत में गुज़रा है।

(८) اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ○
(बक़रह ३६)

8. जो लोग अपना माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं फिर न तो (जिसको दिया उस पर) एहसान जताते हैं और न ही किसी तरह उस को तक़्लीफ़ पहुंचाते हैं तो उनके लिए उन के रब के पास इस का सवाब है और (क़ियामत के दिन) न तो उनको किसी क़िस्म का ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मगीन होंगे।

फ़ायदा:- यह आयते शरीफ़ा पहली आयत के बाद ही है और इस रूकूअ् में सारा ही मज़मून इसी के मुताल्लिक़ है। अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने की तर्ग़ीब और एहसान जता कर उसको बर्बाद न करने पर तंबीह है और किसी और तरह से तक्लीफ़ पहुंचाने का यह मतलब है कि अपने इस एहसान की वजह से उसके साथ गिरा हुआ बर्ताव करे, उस को ज़लील समझे।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि कुछ आदमी जन्नत में दाख़िल न होंगे। उनमें से एक वह शख़्स है जो अपने दिए हुए पर एहसान जताये। दूसरा वह शख़्स है जो मां बाप की नाफ़रमानी करे। तीसरा वह है जो शराब पीता रहता हो वग़ैरह वग़ैरह। *(दुर्रे मंसूर)*

इमाम ग़ज़्ज़ाली रह॰ ने एह्या में सदक़े के आदाब में लिखा है कि उसको 'मन्न' और 'अज़ा' से बर्बाद न करे। मन्न और अज़ा की तफ़्सील में उलमा के कई क़ौल हैं कुछ उलमा ने लिखा है कि मन्न यह है कि ख़ुद उस से इसका तज़्किरा करे और अज़ा यह है कि उस का दूसरों से इज़्हार करे।

कुछ ने फ़रमाया है कि मन्न यह है कि इस अता के बदले में उससे कोई बेगार ले और अज़ा यह है कि उसको फ़क़ीरी का ताना दे। कुछ ने फ़रमाया है कि मन्न यह है कि इस अता की वजह से अपनी बड़ाई उस पर ज़ाहिर करे और अज़ा यह है कि उसको सवाल की वजह से झिड़के।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि असल मन्न यह है कि अपने दिल में अपना उस पर एहसान समझे, इसी की वजह से फिर ऊपर वाली बातें ज़ाहिर होती हैं, हालांकि उस फ़क़ीर का अपने ऊपर एहसान समझना चाहिए कि उसने अल्लाह जल्ल शानुहू का हक़ उससे क़ुबूल करके उसको बरीयुज़्ज़िमा बना दिया[1] और उसके माल की पाकी का सबब बना और जहन्नम के अज़ाब से जो ज़कात के रोकने की वजह से होता, निजात दिलायी। *(एह्याउल उलूम)*

मशहूर मुहद्दिस इमाम शाबी रह॰ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स अपने आपको सवाब का इससे ज़्यादा मुहताज न समझे जितना फ़क़ीर को अपने सदक़े का मुहताज समझता है, उसने अपने सदक़े को ज़ाया कर दिया और वह सदक़ा उसके मुँह पर मार दिया जाता है। *(एह्या उल उलूम)*

क़ियामत का दिन निहायत ही सख़्त रंज व ग़म और ख़ौफ़ का दिन है जैसा कि इस रिसाले के ख़त्म पर आ रहा है, उस दिन किसी का बे-ख़ौफ़ होना, ग़मगीन न होना बहुत ऊँची चीज़ है।

1. यानी ज़िम्मेदारी से बचा लिया।

(٩) إِنْ تُبْدُوا الصَّدَقَاتِ فَنِعِمَّا هِيَ وَإِنْ تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَيُكَفِّرُ عَنكُم مِّن سَيِّئَاتِكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ○ (بقرہ ع ۳۷)

9. सदक़ात को अगर तुम ज़ाहिर करके दो तब भी अच्छी बात है और अगर तुम उन को चुपके से फ़क़ीरों को दे दो तो यह तुम्हारे लिये ज़्यादा बेहतर है और हक़ तआला शानुहू तुम्हारे कुछ गुनाह माफ़ कर देंगे और अल्लाह जल्ल शानुहू को तुम्हारे कामों की ख़बर है। (दूसरी आयत में इर्शाद है)

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ○ (بقرہ ع ۳۸)

जो लोग अपने मालों को ख़र्च करते हैं, रात दिन, पोशीदा और खुल्लम खुल्ला, उनके लिए उनके रब के पास इसका सवाब है और क़ियामत के दिन न उनको कोई ख़ौफ़ होगा और न वे ग़म में होंगे।

फ़ायदा:- इन दोनों आयतों में सदक़ा को छुपाकर देना और खुल्लम खुल्ला ज़ाहिर करके देना दोनों तरीक़ों की तारीफ़ की गयी है और बहुत सी अहादीस और क़ुरआन पाक की आयात में रिया की यानी दिखलावे के लिए काम करने की बुराई और उसको शिर्क बताया है और सवाब को ज़ाया कर देने वाला, बल्कि गुनाह को लाज़िम कर देने वाला बताया है, इसलिए पहले यह समझ लेना चाहिए कि दिखलावा और चीज़ है और यह ज़रूरी नहीं है कि जो काम खुल्लम खुल्ला किया जाये, वह रिया ही हो, बल्कि रिया यह है कि अपनी बड़ाई ज़ाहिर करने के वास्ते, अपनी शोहरत के वास्ते, अपना कमाल ज़ाहिर करने और इज़्ज़त हासिल करने के वास्ते कोई काम किया जाए तो वह रिया है, जो अल्लाह जल्ल शानुहू की रज़ा और ख़ुशनूदी हासिल करने के लिए किया जाये और अल्लाह की ख़ुशनूदी किसी मस्लहत से ऐलान ही में हो तो वह रिया नहीं है, इसके बाद हर अमल ख़ासतौर पर सदक़ा में अफ़ज़ल यही है कि वह छुप कर किया जाए कि इसमें रिया का एहतिमाल (शक) भी नहीं रहता और सदक़ा लेने वाले की ज़िल्लत और तकलीफ़ से भी अम्न है और यह भी मस्लहत है कि उस वक़्त अगरचे रिया न हो, लेकिन जब आम तौर से लोगों में सख़ावत मशहूर होने लगे तो तकब्बुर और ख़ुदबीनी[1] पैदा होने का एहतिमाल है। और या

1. यानी अपने आप को बड़ा समझना और घमण्ड करना।

भी है कि लोगों में अगर शोहरत होगी तो फिर बहुत से लोग सवालात से परेशान करने लगेंगे और अपने मालदार होने की शोहरत से दुन्यवी नुक़्सानात कई क़िस्म के पैदा होने लगेंगे। हुकूमत के टैक्स, चोरों की निगाहें, हासिदों की दुश्मनी।

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि सदक़ा का छुपे तौर से देना रिया और शोहरत से ज़्यादा बईद है और हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद भी नक़ल किया गया है कि अफ़ज़ल सदक़ा किसी तंगदस्त का अपनी कोशिश से किसी नादार को चुपके से दे देना है और जो शख़्स अपने सदक़े का तज़्किरा करता है वह अपनी शोहरत का तालिब है और जो मज्मे में देता है वह रियाकार है।

पहले बुज़ुर्ग इख़्फ़ा में[1] इतनी कोशिश करते थे कि वह यह भी नहीं पसंद करते थे कि फ़क़ीर को भी इसका इल्म हो कि किसने दिया। इसलिए कुछ तो नाबीना फ़क़ीरों को छांट कर देते थे और कुछ सोते हुए फ़क़ीर की जेब में डाल देते थे और कुछ किसी दूसरे के ज़रिए से दिलवाते कि फ़क़ीर को पता न चले और उसको हया (शर्म) न आवे। बहरहाल अगर शोहरत और रिया मक़्सूद है तो नेकी बर्बाद गुनाह लाज़िम है।

इमाम ग़ज़ाली रह० ने लिखा है कि जहां शोहरत मक़्सूद होगी वह अमल बेकार हो जाएगा, इसलिये कि ज़कात का वजूब माल की मुहब्बत को ख़त्म करने के वास्ते है और हुब्बे जाह (ओहदे व मरतबे की मुहब्बत) का मर्ज़ लोगों में हुब्बे माल (माल की मुहब्बत) से भी ज़्यादा होता है और आख़िरत में दोनों ही हलाक करने वाली चीज़ें हैं। लेकिन बुख़्ल (कंजूसी) की सिफ़त तो क़ब्र में बिच्छू की सूरत में मुसल्लत होती है और रिया और शोहरत की सिफ़त अज़्दहा की सूरत में मुन्तक़िल हो जाती है। *(एहया उल उलूम)*

एक हदीस में है कि आदमी की बुराई के लिए इतना ही काफ़ी है कि उंगलियों से उसकी तरफ इशारा किया जाने लगे, दीनी उमूर में इशारा हो या दुन्यवी उमूर में।

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रह० फ़रमाते हैं कि जो शख़्स अपनी शोहरत को पसंद करता हो, उसने अल्लाह तआला से सच्चाई का मामला नहीं किया।

अय्यूब सख़्तियानी रह० फ़रमाते हैं कि जो शख़्स अल्लाह तआला से सच्चाई का मामला करता है उसको यह पसंद हुआ करता है कि कोई उसका

1. यानी छिपा कर देने में।

घर भी न जाने कि कहाँ है। *(एहया उल उलूम)*

हज़रत उमर रज़ि॰ एक मर्तबा मस्जिदे नबवी में हाज़िर हुए तो देखा कि हज़रत मुआज़ रज़ि॰ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र शरीफ़ के पास बैठे हुए रो रहे हैं। हज़रत उमर रज़ि॰ ने दर्याफ़्त किया कि क्यों रो रहे हो? हज़रत मुआज़ रज़ि॰ ने फ़रमाया कि मैंने हुज़ूर सल्ल॰ से सुना था कि रिया का थोड़ा सा हिस्सा भी शिर्क है और हक़ तआला शानुहू ऐसे मुत्तक़ी लोगों को महबूब रखता है जो ज़ाविया-ए-ख़ुमूल (गुमनामी) में रहते हों कि अगर कहीं चले जायें तो कोई तलाश न करे और मज्मा में आयें तो कोई उनको पहचाने भी नहीं। उनके दिल हिदायत के चिराग़ हों और हर गर्दआलूद तारीक मक़ाम से ख़लासी पाने वाले हों। *(एहयाउल उलूम)*

ग़रज़ रिया की मज़म्मत (बुराई) बहुत सी आयात और अहादीस में वारिद हुई है, लेकिन इन सबके बावजूद कभी एलान में दीनी मस्लहत होती है, मसलन दूसरों को तर्ग़ीब की ज़रूरत के मौक़े पर एक आध शख़्स के सदक़े से दीनी अहम ज़रूरतें पूरी नहीं हो सकतीं। ऐसे वक़्त में सदक़े का इज़हार दूसरों की तर्ग़ीब का सबब बनकर ज़रूरत के पूरा होने का सबब बन जाता है, इसलिये हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि क़ुरआन पाक को आवाज़ से पढ़ने वाला ऐसा है जैसाकि एलान के साथ सदक़ा करने वाला और क़ुरआन पाक को आहिस्ता पढ़ने वाला ऐसा है जैसा कि चुपके से सदक़ा करने वाला। *(मिश्कात शरीफ़)*

कि क़ुरआन पाक का भी वक़्त के तक़ाज़े के मुनासिब कभी आवाज़ से पढ़ना अफ़ज़ल होता है और कभी आहिस्ता पढ़ना।

पहली आयते शरीफ़ा के मुताल्लिक़ बहुत से उलमा से नक़्ल किया गया कि इस आयते शरीफ़ा में सदक़ा-ए-फ़र्ज़ यानी ज़कात और सदक़ा-ए-नफ़्ल दोनों का बयान है और सदक़ा-ए-फ़र्ज़ का एलान से अदा करना अफ़ज़ल है जैसा कि और फ़राइज़ का भी यही हुक्म है कि उनका एलान के साथ करना अफ़ज़ल है, इसलिये कि इसमें दूसरों की तर्ग़ीब के साथ अपने ऊपर से इस इल्ज़ाम और इत्तिहाम का दफ़ा करना मक़्सूद है कि यह ज़कात अदा नहीं करता। इसी वजह से दूसरी मस्लिहतों के अलावा नमाज़ में जमाअत मशरूअ् हुई कि इसमें उसके अदा करने का एलान है।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह॰ फ़रमाते हैं कि अल्लामा तबरी रह॰ वग़ैरह ने इस

पर उलमा का इज्माअ नक़्ल किया है कि सदक़ा-ए-फ़र्ज़ में एलान अफ़ज़ल है और सदक़ा-ए-नफ़्ल में इख़्फ़ा (छुपाना) अफ़ज़ल है।

ज़ैन बिन अलमुनीर रह॰ कहते हैं कि यह हालात के इख़्तिलाफ़ से मुख़्तलिफ़ होता है, मसलन अगर हाकिम ज़ालिम हो और ज़कात का माल मख़्फ़ी हो तो ज़कात का इख़्फ़ा औला होगा और अगर कोई शख़्स मुक्तदा है, उसके फ़ेअ्ल का लोग इत्तिबाअ् करेंगे तो सदक़ा-ए-नफ़्ल का भी एलान औला होगा। *(फ़त्हुल बारी)*

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ ने आयते शरीफ़ा (ऊपर ज़िक्र हुई) की तफ़्सीर में इर्शाद फ़रमाया है कि हक़ तआला शानुहू ने नफ़्ल सदक़े में आहिस्ता के सदक़े को एलानिया के सदक़े पर सत्तर दर्जा फ़ज़ीलत दी है और फ़र्ज़ सदक़े में एलानिया को मख़्फ़ी सदक़े पर पच्चीस दर्जा फ़ज़ीलत दी है और इसी तरह और सब इबादात के नवाफ़िल और फ़राइज़ का हाल है। *(दुर्रे मंसूर)*

यानी दूसरी इबादात में भी फ़राइज़ को एलान के साथ अदा करना छुप कर अदा करने से अफ़्ज़ल है कि फ़राइज़ छुप कर अदा करने में अपने ऊपर तोहमत है। दूसरे यह भी नुक़सान है कि अपने मुताल्लिक़ीन ये समझेंगे कि यह शख़्स फ़लां उबादत करता ही नहीं और इससे उनके दिलों में इस इबादत की वक़्अत और अहमियत कम हो जायेगी और नवाफ़िल में भी अगर दूसरों के इत्तिबाअ् और इक़्तिदा का ख़्याल हो तो एलान अफ़्ज़ल है।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ के वास्ते से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़्ल किया गया है कि नेक अमल का चुपके से करना एलानिया से अफ़ज़ल है, मगर उस शख़्स के लिये जो इत्तिबाअ् का इरादा करे।

हज़रत अबू उमामा रज़ि॰ कहते हैं कि हज़रत अबूज़र रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया कि कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि किसी फ़क़ीर को चुपके से कुछ दे देना और नादार की कोशिश अफ़्ज़ल है, और असल यही है कि नफ़्ली सदक़े का मख़्फ़ी तौर से अदा करना अफ़ज़ल है, अलबत्ता अगर कोई दीनी मस्लहत एलान में हो तो एलान भी अफ़ज़ल हो जाता है, लेकिन इस बात में अपने नफ़्स और शैतान से बे फ़िक्र न रहे कि वह सदक़े को बर्बाद करने के लिये दिल को यह समझाये कि एलान में मस्लहत है बल्कि बहुत ग़ौर से इसको जांच ले कि एलान में वाक़ई दीनी मस्लहत है या नहीं और सदक़ा करने के बाद भी इसका तज़्किरा न करता फिरे

कि यह भी एलानिया सदक़ा करने में दाख़िल हो जाता है।

एक हदीस में आया है कि आदमी कोई अमल मख़्फ़ी करता है तो वह मख़्फ़ी अमल लिख लिया जाता है, फिर जब वह उसका किसी से इज़हार कर दे तो वह मख़्फ़ी से एलानिया में मुंतक़िल कर दिया जाता है। फिर अगर वह लोगों से कहता फिरे तो वह एलानिया से रिया में मुंतक़िल कर दिया जाता है। *(एहयाउल उलूम)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है कि सात आदमी ऐसे हैं जिनको अल्लाह जल्ल शानुहू उस दिन अपने साए में रखेंगे, जिस दिन अल्लाह के सिवा कहीं साया न होगा, (यानी क़ियामत के दिन)

1. एक आदिल बादशाह (हाकिम)

2. दूसरे वह नौजवान, जो अल्लाह जल्ल शानुहू की इबादत में नश्व व नुमा पाता है।[1]

3. तीसरे वह शख़्स जिसका दिल मस्जिद में अटका हुआ हो,

4. चौथे वे दो शख़्स जिनमें सिर्फ़ अल्लाह की वजह से मुहब्बत हो, कोई दुन्यवी ग़रज़ एक की दूसरे से जुड़ी हुई न हो, उसी पर उनका आपस में इज्तिमाअ् हो और उसी पर अलाहिदगी हो,

5. पांचवे वह शख़्स, जिसको कोई हसब नसब वाली ख़ूबसूरत औरत अपनी तरफ़ मुतवज्जह करे और वह कह दे कि मैं अल्लाह से डरता हूँ, इसी तरह कोई मर्द किसी औरत को मुतवज्जह करे और वह औरत यही कह दे,

6. छठे वह शख़्स जो इतना छुपा कर सदक़ा करे कि बायें हाथ को भी ख़बर न हो कि दाहिने हाथ ने क्या ख़र्च किया,

7. सातवें वह शख़्स जो तंहाई में अल्लाह जल्ल शानुहू को याद करके रो पड़े,

इस हदीस में सात आदमी ज़िक्र फ़रमाये हैं, दूसरी अहादीस में इनके अलावा और भी कुछ लोगों के मुताल्लिक़ यह वारिद हुआ है कि वे इस सख़्त दिन में अर्श के साए के नीचे होंगे। उलमा ने उनकी तायदाद बयासी तक गिनवायी है जिनको साहिबे इत्तिहाफ़ ने नक़ल किया है।

बहुत सी अहादीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक़ल किया गया है कि मख़्फ़ी सदक़ा अल्लाह के गुस्से को ख़त्म कर देता है। हज़रत सालिम बिन

1. यानी पलता बढ़ता है।

अबिल जअद रज़ि० कहते हैं कि एक औरत अपने बच्चे के साथ जा रही थी। रास्ते में भेड़िये ने उस बच्चे को उचक लिया। यह औरत उस भेड़िये के पीछे दौड़ी। इतने में एक साइल रास्ते में मिला। उस ने सवाल किया। औरत के पास एक रोटी थी। वह साइल को दे दी। वह भेड़िया वापस आया और उसके बच्चे को छोड़कर चला गया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि तीन आदमियों को हक़ तआला शानुहु महबूब रखते हैं और तीन आदमियों से नाराज़ हैं। जिन को हक़ तआला महबूब रखते हैं-

1. उनमें से एक तो वह शख़्स है कि एक आदमी किसी मज्मे से कुछ सवाल करने आया, जो महज़ अल्लाह तआला के वास्ते से सवाल करता था कि उसकी उन लोगों से कुछ क़राबत भी न थी। एक शख़्स उस मज्मे से उठा और उन की ग़ीबत में चुपके से साइल को कुछ दे दिया, जिस के देने की अल्लाह जल्ल शानुहू के सिवा किसी को भी ख़बर न हो।

2. दूसरे वह शख़्स महबूब है कि एक जमाअत रात भर सफ़र में चली और जब नींद उन चलने वालों पर ग़ालिब हो गयी हो और वे थोड़ी देर आराम लेने के लिए सवारियों से उतरे हों, उन में उस वक़्त कोई शख़्स बजाए लेटने के नमाज़ में खड़ा होकर हक़ तआला शानुहू के सामने आजिज़ी करने लगा हो।

3. तीसरा वह शख़्स है कि एक जमाअत जिहाद कर रही हो, और कुफ़्फ़ार से मुक़ाबले में हार होने लगे और लोग पीठ फेरने लगें, उस वक़्त यह शख़्स उन में से सीना तान कर मुक़ाबले में डट जाए, यहां तक कि शहीद हो जाए या फ़त्ह हो जाए।

और तीन शख़्स जिनसे हक़ तआला शानुहू नाराज़ हैं -

1. उनमें से एक वह शख़्स है, जो बूढ़ा होकर भी ज़िना में मुब्तला हो।

2. दूसरे वह शख़्स है जो फ़क़ीर होकर तकब्बुर करे।

3. तीसरा वह मालदार है जो ज़ालिम हो।

अहादीस के सिलसिले में नं० 15 पर भी यह हदीस आ रही है। एक और हदीस में है, हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० ने ख़ुत्बा पढ़ा, जिसमें इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो ! मरने से पहले अपने गुनाहों से तौबा कर लो और नेक अमल करने में जल्दी किया करो। ऐसा न हो किसी दूसरे काम में मश्ग़ूली हो जाए और वह रह जाए और अल्लाह जल्ल शानुहू के साथ अपना रिश्ता जोड़ कर और कसरत से उसका ज़िक्र करके और मख़्फ़ी और

एलानिया सदक़ा करके कि इससे तुम्हें रिज़्क़ दिया जाएगा, तुम्हारी मदद की जाएगी और तुम्हारी शकिस्तगी की इस्लाह की जाएगी।

एक हदीस में है कि क़ियामत के दिन हर शख़्स अपने सदक़े के साए में होगा, जब तक हिसाब का फ़ैसला न हो यानी क़ियामत के दिन जब आफ़ताब निहायत क़रीब होगा, हर शख़्स पर उसके सदक़ात की मिक़्दार से साया होगा। जितना ज़्यादा सदक़ा दिया होगा, उतना ही ज़्यादा साया होगा।

एक दूसरी हदीस में है कि सदक़ा क़ब्रों की गर्मी को दूर करता है और हर शख़्स क़ियामत के दिन अपने सदक़े से साया हासिल करेगा।

और यह मज़्मून तो बहुत सी रिवायात में आया है कि सदक़ा बलाओं को दूर करता है। इस ज़माने में जबकि मुसलमानों पर उनके आमाल की बदौलत हर तरफ़ से हर क़िस्म की बलाएं मुसल्लत हो रही हैं, सदक़ात की बहुत ज़्यादा कसरत करनी चाहिये, खास कर जबकि देखती आँखों उम्र भर का जमा किया हुआ खड़े खड़े छोड़ना पड़ जाता है। ऐसी हालत में बहुत एहतिमाम से बहुत ज़्यादा मिक़्दार में सदक़ात करते रहना चाहिए। कि इसमें वह माल भी ज़ाया होने से महफ़ूज़ हो जाता है जो सदक़ा किया गया। और उसकी बरकत से अपने ऊपर से बलाएं भी हट जाती हैं, मगर अफ़सोस कि हम लोग इन हालात को अपने आँखों से देखते हुए भी सदक़ात का एहतिमाम नहीं करते।

एक हदीस में है कि सदक़ा बुराई के सत्तर दरवाज़े बंद करता है। एक हदीस में है कि सदक़ा अल्लाह जल्ल शानुहू के ग़ुस्से को दूर करता है और बुरी मौत से हिफ़ाज़त करता है।

एक हदीस में है कि सदक़ा उम्र को बढ़ाता है और बुरी मौत को दूर करता है और तकब्बुर और फ़ख़्र को हटाता है।

एक हदीस में है कि हक़ तआला शानुहू एक रोटी के लुक़्मे से या एक मुट्ठी भर खजूर या और कोई ऐसी ही मामूली चीज़, जिस से मिस्कीन की ज़रूरत पूरी होती हो, तीन आदमियों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाते हैं -

एक साहबे ख़ाना, (घर का मालिक) जिसने सदक़े का हुक्म दिया,

दूसरे घर की बीवी, जिसने रोटी वग़ैरह पकायी,

तीसरे वह ख़ादिम, जिसने फ़क़ीर तक पहुँचाया।

यह हदीस बयान फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया, सारी तारीफ़ें हमारे अल्लाह के लिए हैं, जिसने हमारे ख़ादिमों को भी सवाब में फ़रामोश नहीं किया।

एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि जानते हो बड़ा सख़्त ताक़तवर कौन है। लोगों ने अर्ज़ किया कि जो मुक़ाबले में दूसरे को पछाड़ दे। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, बड़ा बहादुर वह है जो गुस्से के वक़्त अपने ऊपर क़ाबू पाए हुए हो। फिर दर्याफ़्त फ़रमाया, जानते हो कि बांझ कौन है? लोगों ने अर्ज़ किया कि जिसके औलाद न हो। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि नहीं, बल्कि वह आदमी है जिसने कोई औलाद आगे न भेजी हो। फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, जानते हो फ़क़ीर कौन है? लोगों ने अर्ज़ किया जिसके पास माल न हो। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया फ़क़ीर और पूरा फ़क़ीर वह है जिसके पास माल हो और उसने आगे कुछ न भेजा (कि वह उस दिन ख़ाली हाथ खड़ा रह जाएगा, जिस दिन उसको सख़्त ज़रूरत होगी)।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि अपने नफ़्स को अल्लाह तआला से ख़रीद ले अगरचे एक खजूर के टुकड़े ही के साथ क्यों न हो। मैं तुझे अल्लाह जल्ल शानुहू के किसी मुतालबे से नहीं बचा सकता। ऐ आइशा ! कोई मांगने वाला तेरे पास से ख़ाली न जाए चाहे बकरी का खुर ही क्यों न हो। *(दुर्रे मंसूर)*

इमाम ग़ज़्ज़ाली रह॰ ने लिखा है कि पहले लोग इसको बुरा समझते थे कि कोई दिन सदक़ा करने से ख़ाली जाए, चाहे एक खजूर ही क्यों न हो चाहे एक रोटी का टुकड़ा ही क्यों न हो, इसलिये कि हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि क़ियामत में हर शख़्स अपने सदक़े के साए में होगा। *(एहया अव्वल)*

(१०) يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ (بقرہ ع ۳۸)

10. हक़ तआला शानुहू सूद को मिटाते हैं और सदक़ात को बढ़ाते हैं।

फ़ायदा:- सदक़ात का बढ़ाना इससे पहले बहुत सी रिवायात में गुज़र चुका है कि आख़िरत में उस का सवाब पहाड़ के बराबर होता है यह तो आख़िरत के एतबार से था और दुनिया में भी अक्सर बढ़ता है कि जो शख़्स सदक़ा इख़्लास के साथ कसरत से करता रहता है उसकी आमदनी में इज़ाफ़ा होता रहता है जिसका दिल चाहे तजुर्बा करके देख ले, अलबत्ता इख़्लास शर्त है, रिया और फ़ख़्र न हो और सूद आख़िरत में तो मिटाया ही जाता है दुनिया में भी अक्सर बर्बाद हो जाता है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि सूद अगरचे बढ़ा हुआ हो लेकिन उस का अन्जाम कमी की तरफ़ होता है और मामर रज़ि० कहते हैं कि चालीस साल में सूद में कमी हो जाती है।

हज़रत ज़हहाक रज़ि० फ़रमाते हैं कि सूद दुनिया में बढ़ता है और आख़िरत में मिटा दिया जाता है।

हज़रत अबू बर्ज़ा रज़ि० फ़रमाते हैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि आदमी एक टुकड़ा देता है वह अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां इस क़दर बढ़ता है कि उहद पहाड़ के बराबर हो जाता है।

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ (اٰل عمران ع ۱۰)

11. ऐ मुसलमानो ! तुम (कामिल) नेकी को हासिल न कर सकोगे, यहां तक कि उस चीज़ को ख़र्च न करो जो तुम को (ख़ूब) महबूब हो।

फ़ायदा:- हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि अंसार में सब से ज़्यादा दरख़्त खजूरों के हज़रत अबू तल्हा रज़ि० के पास थे और उनका एक बाग़ था। जिसका नाम बीरेहा था, वह उनको बहुत ही ज़्यादा पसंद था। यह बाग़ मस्जिदे नबवी के सामने ही था। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर उस बाग़ में तशरीफ़ ले जाते और उसका पानी नोश फ़रमाते जो बहुत ही बेहतरीन पानी था। जब यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई तो हज़रत अबूतल्हा रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! हक़ तआला शानुहू यूँ इर्शाद फ़रमाते हैं -

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ (اٰل عمران ع ۱۰)

"लन् तनालुल् बिर् र हत्ता तुन्फिक़ू मिम् मा तुहिब्बून०"

और मुझे अपनी सारी चीज़ों में बीरेहा सबसे ज़्यादा महबूब है, मैं उसको अल्लाह के लिए सदक़ा करता हूँ और उसके अज्र व सवाब की अल्लाह से उम्मीद रखता हूँ। आप जहां मुनासिब समझें उस को ख़र्च फ़रमाएं। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया, वाह! वाह! बहुत ही नफ़े का माल है। मैं यह मुनासिब समझता हूँ कि इसको अपने रिश्तेदारों में तक़्सीम कर दो। अबू तल्हा रज़ि० ने

अर्ज़ किया, बेहतर है और उसको अपने चचाज़ाद भाईयों और दूसरे रिश्तेदारों में बांट दिया।

एक और हदीस में है, अबू तल्हा रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरा बाग़ जो इतनी बड़ी मालियत का है, वह सदक़ा है और मैं अगर इसकी ताक़त रखता हूँ कि किसी को इसकी ख़बर न हो तो ऐसा करता, मगर बाग़ ऐसी चीज़ नहीं जो मख़्फ़ी (छुपी) रह सके।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुझे जब इस आयते शरीफ़ा का इल्म हुआ तो मैं ने उन सब चीज़ों में ग़ौर किया जो अल्लाह जल्ल शानुहू ने मुझे अता फ़रमायी थीं, मैंने देखा कि इन सबमें मुझे सबसे ज़्यादा महबूब अपनी बांदी मर्जाना है। मैंने कहा कि वह अल्लाह के वास्ते आज़ाद है। इसके बाद अगर मैं उस चीज़ से जिसको अल्लाह के वास्ते दे दिया हो, दोबारा नफ़ा हासिल करना गवारा करता तो उस बांदी से आज़ाद कर देने के बाद निकाह कर लेता। (कि वह जायज़ था और इससे सदक़े में कुछ कमी न होती थी, लेकिन चूंकि इसमें सूरते सदक़े में रूजूअ् की सी थी) यह मुझे गवारा न हुआ, इसलिये उसका निकाह अपने ग़ुलाम हज़रत नाफ़ेअ् रज़ि० से कर दिया।

एक और हदीस में है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि० नमाज़ पढ़ रहे थे, तिलावत में जब इस आयते शरीफ़ा पर गुज़र हुआ तो नमाज़ ही में इशारे से अपनी एक बांदी को आज़ाद कर दिया। हक़ तआला शानुहू और उसके पाक रसूल सल्ल० के इर्शादात की वक़्अत और उन पर अमल करने में पेशक़दमी तो कोई इन हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ि० से सीखे, वाक़ई यही हज़रात इसके मुस्तहिक़ थे कि हुज़ूर सल्ल० के सहाबी बनाये जाते। हुज़ूर सल्ल० की ख़ादिमियत इन्हीं हज़रात के शायाने शान थी। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम व अर्ज़ाहुम अजमईन०

हज़रत उमर रज़ि० ने हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ि० को लिखा कि जलूला की बांदियों में से एक बांदी उनके लिये ख़रीद दें, उन्होंने एक बेहतरीन बांदी खरीद कर भेज दी। हज़रत उमर रज़ि० ने उस बांदी को अपने पास बुलाया और यह आयते शरीफ़ा पढ़ी और उसको आज़ाद कर दिया।

हज़रत मुहम्मद बिन मुन्कदिर रज़ि० कहते हैं कि जब यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई तो हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० के पास एक घोड़ा था जो उनको अपनी सारी चीज़ों में सबसे ज़्यादा महबूब था, वह उसको लेकर हुज़ूर सल्ल०

की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि यह सदक़ा है। हुज़ूर सल्ल० ने उसको क़ुबूल फ़रमा लिया और लेकर उनके साहबज़ादे हज़रत उसामा रज़ि० को दे दिया। हज़रत ज़ैद रज़ि० के चेहरे पर इससे कुछ गरानी के आसार ज़ाहिर हुए। (कि घर के घर ही में रहा, बाप के बजाए बेटे का हो गया) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने तुम्हारा सदक़ा क़ुबूल कर लिया यानी तुम्हारा सदक़ा अदा हो गया। अब मैं चाहे इसको तुम्हारे बेटे को दूँ या किसी और रिश्तेदार को या अजनबी को (इसलिये कि तुम तो बेटे को नहीं दे रहे जिस से खुदग़रज़ी का शुब्ह हो, तुम तो मुझे दे चुके, अब मुझे इख़्तियार है कि मैं जिसको दिल चाहे दे दूँ।)

क़बीला बनी सुलैम के एक शख़्स कहते हैं कि हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० रबज़ा नाम के एक गांव में रहते थे, वहां उनके पास ऊँट थे और उनका चराने वाला एक बूढ़ा आदमी था। मैं भी वहां उनके करीब ही रहता था। मैंने उनसे अर्ज़ किया कि मैं आपकी ख़िदमत में रहना चाहता हूँ, आपके चरवाहे की मदद करूँगा और आपके फ़ुयूज़ हासिल करूँगा शायद अल्लाह जल्ल शानुहू आपकी बरकात से मुझे भी नफ़ा अता फ़रमा दें। हज़रत अबूज़र रज़ि० ने फ़रमाया मेरा साथी वह है (यानी ऐसे शख़्स को मैं अपना साथी बना सकता हूँ) जो मेरा कहना माने, अगर तुम इसके लिए तैयार हो तो मुज़ाईका नहीं, वरना मेरे साथ रहने का इरादा न करो। मैं ने पूछा कि आप किस चीज़ में मेरी इताअत चाहते हैं, फ़रमाया कि जब मैं कोई चीज़ किसी को देने के लिए माँगू तो सब से बेहतर छांट कर दो। मैं ने क़ुबूल कर लिया और एक ज़माने तक उनकी ख़िदमत में रहा। उनको मालूम हुआ कि इस घाट पर जो लोग आबाद हैं उनको तंगी है। मुझसे फ़रमाया कि एक ऊँट मेरे ऊँटों में से लाओ। मैं ने वायदा के अनुसार तलाश किया तो उन सब में बेहतरीन एक ऊँट नर था, जो बहुत सधा हुआ था, उस जैसा कोई जानवर उनमें नहीं था। मैंने उसके ले जाने का इरादा किया। लेकिन मुझे ख़्याल हुआ कि उसकी ख़ुद यहां भी (जुफ़्ती वग़ैरह के लिए) ज़रूरत रहती है, उसको छोड़कर बाक़ी ऊँटो में जो सबसे अफ़ज़ल और बेहतर जानवर था, वह एक ऊँटनी थी। मैं उसको ले गया। इत्तिफ़ाक़ से हज़रत की नज़र उस ऊंट पर पड़ गयी जिसको मैं मस्लहत की वजह से छोड़कर गया था मुझसे फ़रमाने लगे तुमने मुझ से ख़ियानत की। मैं समझ गया और उस ऊंटनी को वापस लाकर वह ऊंट ले गया। आपने हाज़िराने मज्लिस से मुख़ातिब होकर फ़रमाया कि दो आदमी ऐसे चाहिएं जो एक सवाब का काम करें। दो शख़्सों ने

अपने आपको पेश किया कि हम हाज़िर हैं। फ़रमाया कि अगर तुम्हें कोई उज़्र न हो तो इस ऊंट को ज़िब्ह कर के इसके गोश्त के इतने टुकड़े किये जायें जितने घर उस घाट पर आबाद हैं और सब घरों में एक एक टुकड़ा उसके गोश्त का पहुँचा दिया जाए और मेरा घर भी उनमें शुमार कर लिया जाए और उसमें भी उतना ही जाए जितना और घरों में जाए ज़्यादा न जाए। उन दोनों ने क़ुबूल कर लिया और तामीले इर्शाद कर दी। जब इससे फ़ारिग़ हो गये तो मुझे बुलाया और फ़रमाया कि मुझे यह मालूम न हो सका कि तुम मेरे उस वायदे को जो शुरू में हुआ था भूल गये थे। तब तो मैं माज़ूर समझता हूँ या तुमने बावजूद याद होने के उसको पसे पुश्त डाल[1] दिया था। मैंने अर्ज़ किया कि मैं भूला तो नहीं था मुझे वह याद था, लेकिन जब मैं ने तलाश किया और यह ऊंट सबसे अफ़ज़ल मिला तो मुझे आप की ज़रूरियात का ख़्याल पैदा हुआ कि आप को ख़ुद इसकी ज़रूरत है। फ़रमाने लगे कि महज़ मेरी ज़रूरत की वजह से छोड़ा था? मैं ने अर्ज़ किया कि महज़ इसी वजह से छोड़ा था। फ़रमाने लगे कि मैं अपनी ज़रूरत का वक़्त बताऊं। मेरी ज़रूरत का वक़्त वह है कि जब मैं क़ब्र के गढ़े में डाल दिया जाऊंगा, वह दिन मेरी मुहताजी का दिन होगा। तेरे हर माल में तीन शरीक हैं।

एक- तो मुक़द्दर शरीक है, मालूम नहीं कि तक़्दीर अच्छे माल को ले जाए या बुरे को वह किसी चीज़ का इन्तिज़ार नहीं करती (यानि जिस माल को मैं उम्दा और बेहतर और अपने दूसरे वक़्त के लिए कार आमद समझ कर छोड़ दूँ, मालूम नहीं कि दूसरे वक़्त वह मेरे काम आ सकेगा या नहीं) तो फिर उसी वक़्त क्यों न उसको आख़िरत का ज़ख़ीरा बना कर अल्लाह के बैंक में जमा कर दूँ।

दूसरा- शरीक वारिस है जो हर वक़्त इस इन्तिज़ार में रहता है कि कब तू गढ़े में जावे ताकि वह सारा माल वसूल करे।

तीसरा- तू ख़ुद उस माल का शरीक है (कि अपने काम में ला सकता है) पस इसकी कोशिश कर कि तू तीनों शरीकों में कम हिस्सा पाने वाला न हो। (ऐसा न हो कि मुक़द्दर उसको ले उड़े, कि वह ज़ाया हो जाये या वारिस ले उड़े, इससे बेहतर यही है कि तू उसको जल्दी से हक़ तआला शानुहू के ख़ज़ान में जमा कर दे।)

इसके अलावा हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है -

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ (آل عمران ع ۱۰)

1. पीठ पीछे।

लन् तनालुल् बिर् र हत्ता तुन्फिक़ू मिम् मा तुहिब्बून॰

और यह ऊँट जब मुझे सबसे ज़्यादा महबूब है तो क्यों न इसको अपने लिए मख़्सूस करके महफ़ूज़ कर लूँ और आगे भेज दूँ।

एक और हदीस में आया है, हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि एक जानवर का गोश्त हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में पेश किया गया। हुज़ूर सल्ल॰ ने ख़ुद उसको पसंद नहीं किया, मगर दूसरों को खाने से मना भी नहीं किया। मैं ने अर्ज़ किया कि इसको फ़क़ीरों को दे दूँ। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया ऐसी चीज़ें उनको मत दो जिनको ख़ुद खाना पसंद नहीं करती हो।

एक हदीस में है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ शकर ख़रीद कर ग़रीबों पर तक़्सीम कर देते । हज़रत के ख़ादिम ने अर्ज़ किया कि अगर शकर की बजाए खाना तक़्सीम कर दिया जाये तो ग़रीबों को इससे ज़्यादा नफ़ा हो। फ़रमाया, सही है मेरा भी यही ख़्याल है लेकिन हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है -

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ (اٰل عمران ع ۱۰)

लन् तनालुल् बिर् र हत्ता तुन्फिक़ू मिम् मा तुहिब्बून॰

और मुझे शकर (मीठा) ज़्यादा मर्ग़ूब (पसंदीदा) है। *(दुर्रे मंसूर)*

ये हज़रात किसी चीज़ को अफ़ज़ल समझते हुए भी हक़ तआला शानुहू और उसके पाक रसूल सल्ल॰ के ज़ाहिर अल्फ़ाज़ पर अमल करने की अक्सर कोशिश किया करते थे। इसकी बहुत सी मिसालें हदीसों में मौजूद हैं यह मुहब्बत की इंतिहा है कि महबूब की ज़ुबान से निकली हुई बात पर अमल करना है, चाहे अफ़ज़ल दूसरी चीज़ हो।

(۱۲) وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ (اٰل عمران ع ۱۴)

12. और दौड़ो उस बख़्शिश की तरफ़ जो तुम्हारे रब की तरफ़ से है और दौड़ो उस जन्नत की तरफ़ जिसका फैलाव सारे आसमान और ज़मीन हैं जो तैयार की गयी है ऐसे मुत्तक़ी लोगों के लिए जो अल्लाह

की राह में ख़र्च करते हैं फ़राख़ी में भी और तंगी में भी और ग़ुस्से को ज़ब्त करने वाले हैं और लोगों की ख़ताओं को माफ़ करने वाले हैं और अल्लाह जल्ल शानुहू महबूब रखते हैं एहसान करने वालों को।

फ़ायदा:- उलमा ने लिखा है कि कुछ लोगों ने बनी इस्राईल की इस बात पर रश्क किया था कि जब कोई शख़्स उनमें से गुनाह करता तो उसके दरवाज़े पर वह लिखा हुआ होता और उसका कफ़्फ़ारा भी कि फ़लां काम इस गुनाह के कफ़्फ़ारे में किया जाए, मसलन नाक काट दी जाये, कान काट दिया जाए वग़ैरह वग़ैरह। इन हज़रात को इस पर रश्क था कि कफ़्फ़ारा अदा करने से उस गुनाह के ज़ायल (ख़त्म) हो जाने का यक़ीन था और गुनाह की अहमियत इन हज़रात की निगाह में इतनी सख़्त थी कि इस क़िस्म की सज़ाओं को भी इसके मुक़ाबले में हल्का और क़ाबिले रश्क समझते थे। इन हज़रात के जो वाक़िआत हदीस की किताबों में आते हैं, वे वाक़ई ऐसे ही हैं कि बशरीयत से किसी गुनाह के सरज़द हो जाने के बाद[1] उसकी हैबत और अहमियत उन पर बहुत ज़्यादा मुसल्लत हो जाती, मर्द तो मर्द थे ही औरतों में भी यही जज़्बा था। एक औरत से ज़िना सादिर हो गया, ख़ुद हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुई, ख़ुद एतराफ़े जुर्म किया और गुनाह से पाक होने के शौक़ में अपने आप को संगसार होने के लिए पेश किया और संगसार हो गयी, क्यों? इस लिए कि गुनाह की हैबत (डर) उनके दिल में इस मरने से बहुत ज़्यादा थी।

नमाज़ पढ़ते हुए हज़रत अबू तलहा रज़ि॰ के दिल में अपने बाग़ का ख़्याल गुज़र गया, उसको अल्लाह के रास्ते में सदक़ा करके चैन पड़ी। महज़ इस ग़ैरत में कि नमाज़ में दुनिया की चीज़ का ख़्याल आ गया, ऐसी चीज़ जो नमाज़ में अपनी तरफ़ मुतवज्जह करे अपने पास नहीं रखनी।

एक और अंसारी के साथ भी इस क़िस्म का क़िस्सा गुज़रा कि खजूरें शबाब पर आ रही थीं, नमाज़ में उनका ख़्याल आ गया (कि कैसी पक रही हैं?)

हज़रत उस्मान रज़ि॰ की ख़िलाफ़त का ज़माना था। उनकी ख़िदमत में हाज़िर हो कर बाग़ का क़िस्सा ज़िक्र करके उनके हवाले कर दिया, जिसको उन्होंने पचास हज़ार में फ़रोख़्त करके उसकी क़ीमत दीनी कामों पर ख़र्च कर दी।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने एक मुश्तबह लुक़्मा एक मर्तबा ग़लती से खा लिया। बार बार पानी पी पी कर क़ै की कि यह नाजायज़ लुक़्मा बदन

1. ईमान होने की हैसियत से किसी गुनाह के हो जाने के बाद।

का हिस्सा न बन जाए। बहुत से वाक़िआत इन हज़रात के अपने रिसाले 'हिकायाते सहाबा' में लिख चुका हूँ। ऐसी हालत में इन हज़रात को अगर इस पर रश्क हो कि बनू इसराईल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा उनको मालूम हो जाता था और इससे गुनाह ख़त्म हो जाता था, बे-महल नहीं। हम ना अहलों का ज़ेहन भी यहां तक नहीं पहुँचता कि गुनाह इस क़दर सख़्त चीज़ है, ग़रज़ इन हज़रात के इस रश्क पर अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने लुत्फ़ व करम और अपने महबूब सय्यिदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत पर फ़ज़्ल व इनआम की वजह से यह आयते शरीफ़ा नाज़िल फ़रमायी कि ऐसे नेक कामों की तरफ़ दौड़ो जिनसे अल्लाह जल्ल शानुहू की मग़्फ़िरत मयस्सर हो जाए।

हज़रत सईद बिन जुबैर रह० इस आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि नेक आमाल के ज़रिए से अल्लाह जल्ल शानुहू की मग़्फ़िरत की तरफ़ सबक़त करो और ऐसी जन्नत की तरफ़ सबक़त करो जिसकी वुसअत इतनी है कि सातों आसमान बराबर एक दूसरे के साथ जोड़ दिए जाएं जैसा कि एक कपड़ा दूसरे के बराबर जोड़ दिया जाता है और इसी तरह सातों ज़मीनें एक दूसरे के साथ जोड़ दी जाएं तो जन्नत की वुसअत उनके बराबर होगी।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से भी यही नक़ल किया गया कि सातों आसमान और सातों ज़मीनें एक दूसरे के बराबर जोड़ दी जाएं तो जन्नत की चौड़ाई उनके बराबर होगी।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० के ग़ुलाम हज़रत कुरैब रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुझे हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने तौरात के एक आलिम के पास भेजा और उनकी किताबों से जन्नत की वुसअत का हाल दर्याफ़्त किया, उन्होंने हज़रत मूसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलाम के सहीफ़े निकाले और उनको देख कर बताया कि जन्नत की चौड़ाई इतनी है कि सातों आसमान और सातों ज़मीनें एक दूसरे के साथ जोड़ दी जाएं तो उस के बराबर हों, यह तो चौड़ाई है और उसकी लम्बाई का हाल अल्लाह तआला को मालूम है।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि जंगे बद्र में हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि लोगो ! ऐसी जन्नत की तरफ़ बढ़ो जिसकी चौड़ाई सारे आसमान और ज़मीन हैं।

हज़रत उमैर बिन हम्माम अंसारी रज़ि० ने (ताज्जुब से) अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! ऐसी जन्नत जिसकी चौड़ाई इतनी ज़्यादा है। हुज़ूर सल्ल० ने

फ़रमाया बेशक, हज़रत उमैर रज़ि० ने अर्ज़ किया वाह! वाह! या रसूलल्लाह ख़ुदा की क़सम, मैं उसमें दाख़िल होने वालों में ज़रूर हूँगा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हाँ ! हाँ ! तुम उसमें जाने वालों में हो। उसके बाद हज़रत उमैर रज़ि० ने कुछ खजूरें ऊँट के हौदज में से निकाल कर खाना शुरू कीं। (कि लड़ने की ताक़त पैदा हो) फिर कहने लगे कि इन खजूरों के खा चुकने का इंतज़ार तो बड़ी लम्बी ज़िंदगी है, यह कह कर उन को फेंक कर लड़ाई की जगह चल दिए और लड़ते लड़ते शहीद हो गए। *(दुर्रे मंसूर)*

इस आयते शरीफ़ा में मोमिनों की एक ख़ास तारीफ़ यह भी ज़िक्र की गयी कि गुस्से को पीने वाले और लोगों को माफ़ करने वाले, यह बड़ी ऊँची और ख़ास सिफ़त है।

उलमा ने लिखा है कि जब तेरे भाई से लग़्ज़िश (ख़ता) हो जाए तो तू उसके लिए सत्तर उज़्र पैदा कर और फिर अपने दिल को समझा कि उसके पास इतने उज़्र हैं और जब तेरा दिल उनको क़ुबूल न करे तो बजाए उस शख़्स के अपने दिल को मलामत कर कि तुझ में किस क़दर क़सावत और सख़्ती है कि तेरा भाई सत्तर उज़्र कर रहा है और तू उनको क़ुबूल नहीं करता और अगर तेरा भाई कोई उज़्र करे तो उसको क़ुबूल कर, इसलिए कि हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जिस शख़्स के पास कोई उज़्र करे और वह क़ुबूल न करे तो उस पर इतना गुनाह होता है, जितना चुंगी के मुहर्रिर को। हुज़ूर सल्ल० ने मोमिन की यह सिफ़त बतायी है कि जल्दी ग़ुस्सा आ जाए और जल्दी ही ख़त्म हो जाए। यह नहीं फ़रमाया कि गुस्सा न आता हो, बल्कि यह फ़रमाया कि जल्दी ख़त्म हो जाता हो।

इमाम शाफ़ई रह० का इर्शाद है कि जिसको गुस्से की बात पर गुस्सा न आता हो, वह गधा है और जो राज़ी करने पर राज़ी न हो वह शैतान है। इसलिए हक़ तआला शानुहू ने गुस्से को पीने वाले फ़रमाया। यह नहीं फ़रमाया कि उनको गुस्सा न आता हो। *(एह्या)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स ऐसी हालत में गुस्से को पी ले कि उसको पूरा करने पर क़ादिर हो तो हक़ तआला शानुहू उसको अम्न और ईमान से भरपूर करते हैं। *(दुर्रे मंसूर)*

यानी मजबूरी का नाम सब्र तो हर जगह होता है, कमाल यह है कि क़ुदरत के बावजूद सब्र करे।

एक हदीस में है कि आदमी गुस्से का घूँट पी डाले, इससे ज़्यादा पसंदीदा कोई घूँट अल्लाह जल्ल शानुहू के नज़दीक नहीं है। जो इस घूँट को पी ले, हक़ तआला शानुहू उसके बातिन को ईमान से भर देते हैं।

एक और हदीस में है, जो शख़्स क़ुदरत के बावजूद गुस्सा पी जाए अल्लाह तआला क़ियामत में सारी मख़्लूक के सामने उसको बुलाकर फ़रमायेंगे कि जिस हूर को दिल चाहे इंतिख़ाब कर (छांट) ले।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि बहादुर वह नहीं है जो दूसरों को पछाड़ दे, बहादुर वह है जो ग़ुस्से में अपने आप पर क़ाबू पा ले।

हज़रत अली बिन इमाम हुसैन रज़ि० की एक बांदी उनको वुज़ू करा रही थी कि लोटा हाथ से गिरा, जिससे उनका मुँह ज़ख़्मी हो गया। उन्होंने तेज़ निगाह से बांदी को देखा। वह कहने लगी अल्लाह तआला का इर्शाद है **'वल् काज़िमीनल् ग़ै-ज़'**। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया मैं ने अपना गुस्सा पी लिया। उस ने फिर पढ़ा, **'वल् आफ़ी न अनिन्ना सि'** आपने फ़रमाया तुझे अल्लाह तआला माफ़ करे। उसने पढ़ा- **वल्लाहु युहिब्बुल् मुहसिनी न,** आपने फ़रमाया तू आज़ाद है। *(दुर्रे मंसूर)*

एक मर्तबा एक मेहमान के लिए उनका ग़ुलाम गर्म गर्म गोश्त का प्याला भरा हुआ ला रहा था। वह उनके छोटे बच्चे के सर पर गिर गया वह मर गया आपने ग़ुलाम से फ़रमाया कि तू आज़ाद है और ख़ुद बच्चे की तज्हीज़ व तक्फ़ीन में लग गए। *(रौज़)*

(۱۳) اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ۭ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝ (انفال ع۱)

13. बस ईमान वाले तो वे लोग होते हैं कि जब उनके सामने अल्लाह जल्ल शानुहू का ज़िक्र आ जाए तो उसकी अज़्मत के ख़्याल से उनके दिल डर जाएं और जब अल्लाह जल्ल शानुहू की आयतें उनके सामने तिलावत की जाती हैं तो वे उनके ईमान को और ज़्यादा मज़बूत कर देती हैं। और वे लोग अपने रब ही पर तवक्कुल करते हैं और नमाज़

को क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से अल्लाह के वास्ते ख़र्च करते हैं बस यही हैं, सच्चे ईमान वाले उनके लिये बड़े बड़े दर्जे हैं उनके रब के पास और उनके लिए मग़्फ़िरत है और उनके लिए इज़्ज़त की रोज़ी है।

फ़ायदा:- हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि० फ़रमाते हैं कि दिल का डर जाना ऐसा होता है जैसे कि खजूर के ख़ुश्क पत्तों में आग लग जाना। इसके बाद अपने शागिर्द शहर बिन हौशब रज़ि० को ख़िताब करके फ़रमाते हैं कि ऐ शहर ! तुम बदन की कपकपी नहीं जानते? उन्होंने अर्ज़ किया, जानता हूँ। फ़रमाया, उस वक़्त दुआ किया करो। उस वक़्त की दुआ क़ुबूल होती है।

हज़रत साबित बनानी रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि मुझे मालूम हो जाता है कि मेरी कौन सी दुआ क़ुबूल हुई और कौन सी नहीं हुई। लोगों ने अर्ज़ किया कि यह किस तरह मालूम हो जाता है, फ़रमाया कि जिस वक़्त मेरे बदन पर कपकपी आ जाए और दिल ख़ौफ़ज़दा हो जाए और आँखों से आँसू बहने लगें, उस वक़्त की दुआ मक़्बूल होती है।

हज़रत सदी रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब उनके सामने अल्लाह का ज़िक्र आ जाए का मतलब यह है कि कोई शख़्स किसी पर ज़ुल्म का इरादा करे या किसी और गुनाह का क़स्द करे और उससे कहा जाए कि अल्लाह से डर, तो उसके दिल में अल्लाह का ख़ौफ़ पैदा हो जाए।

हारिस बिन मालिक अंसारी रज़ि० एक सहाबी हैं। एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर थे। हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़रमाया, हारिस! क्या हाल है? अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मैं बेशक सच्चा मोमिन बन गया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि सोचकर कहो, क्या कहते हो, हर चीज़ की एक हक़ीक़त होती है, तुम्हारे ईमान की क्या हक़ीक़त है (यानि तुमने किस बात की वजह से यह तय कर लिया कि मैं सच्चा मोमिन बन गया) अर्ज़ किया कि मैंने अपने नफ़्स को दुनिया से फेर लिया, रात को जागता हूँ, दिन को प्यासा रहता हूँ। (यानि रोज़ा रखता हूँ) और जन्नत वालों की आपस में मुलाक़ातों का मंज़र मेरी आँखों के सामने रहता है और जहन्नम वालों के शोर व शग़ब और वावैला का नज़ारा भी आँखों के सामने है (यानि दोज़ख़ जन्नत का तसव्वुर हर वक़्त रहता है) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हारिस ! बेशक तुमने दुनिया से अपने नफ़्स को फेर लिया। उसको मज़बूत पकड़े रहो। तीन मर्तबा हुज़ूर सल्ल० ने यही फ़रमाया।

(दुर्रे मंसूर)

और ज़ाहिर बात है कि जिस शख़्स के सामने हर वक़्त दोज़ख़ और जन्नत का मंज़र रहेगा वह दुनिया में कहाँ फंस सकता है।

(۱۴) وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ یُوَفَّ اِلَیْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ○
(انفال ع ۸)

14. और जो कुछ तुम अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करोगे, उसका सवाब तुमको पूरा पूरा दिया जायेगा और तुम पर किसी क़िस्म का ज़ुल्म न किया जायेगा।

फ़ायदा:- जिन आयात और अहादीस में सवाब बढ़ा कर मिलने का बयान है, वे इसके मनाफ़ी नहीं हैं, उसका मतलब यह है कि उन आमाल में किसी क़िस्म की कमी नहीं होगी, बाक़ी सवाब की मिक़्दार क्या होगी, वह मौक़े की ज़रूरत, ख़र्च करने वाले की नीयत और हालात के एतिबार से जितनी भी बढ़ जाये, यह तो आख़िरत के एतिबार से है और बहुत सी बार दुनिया में भी उसका पूरा बदल मिलता है जैसा कि दूसरी आयात और अहादीस से इसकी ताईद होती है जैसा कि आयात के तहत में नं० 20 पर और अहादीस के तहत में नं० 8 पर आ रहा है और इस लिहाज़ से अगर इस आयते शरीफ़ा में इस तरफ़ इशारा हो तो बईद नहीं।

(۱۵) قُلْ لِّعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا یُقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَیُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا
وَّعَلَانِیَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ یَّاْتِیَ یَوْمٌ لَّا بَیْعٌ فِیْهِ وَلَا خِلٰلٌ ○ (ابراهیم ع ۵)

15. जो मेरे ख़ास ईमान वाले बंदे हैं, उनसे कह दीजिए कि वे नमाज़ को क़ायम रखें और हमारे दिये हुए रिज़्क़ से ख़र्च करते रहें, पोशीदा तौर से भी और एलानिया भी ऐसे दिन के आने से पहले, जिसमें न ख़रीद व फ़रोख़्त होगी न दोस्ती होगी।

फ़ायदा:- पोशीदा तौर से भी और एलानिया भी यानी जिस वक़्त जिस क़िस्म का सदक़ा मुनासिब हो कि हालात के एतिबार से दोनों क़िस्मों की ज़रूरत होती है और हो सकता है कि मतलब यह हो कि फ़र्ज़ सदक़ात भी जिनका एलानिया अदा करना बेहतर है और नवाफ़िल भी, जिनका इख़्फ़ा (छुपाना) बेहतर है, जैसा कि आयते शरीफ़ा नं० 9 के तहत में गुज़रा और उस दिन से मुराद क़ियामत का दिन है जैसा कि आयते शरीफ़ा नं० 6 में गुज़रा और नमाज़ को क़ायम रखना सबसे पहली आयते शरीफ़ा में गुज़र चुका है।

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुत्बा पढ़ा, उसमें फ़रमाया, लोगो ! मरने से पहले पहले तौबा कर लो (ऐसा न हो कि मौत आ जाए और तौबा रह जाए) और मश्ग़ूलात की कसरत से पहले पहले नेक आमाल कर लो, (ऐसा न हो कि फिर मश्ग़ूलात की कसरत से वक़्त न मिले) और अपना और अपने रब का ताल्लुक़ मज़्बूत कर लो, उसकी याद की कसरत के साथ और मख़्फ़ी और एलानिया सदक़े की कसरत के ज़रिए से कि इसकी वजह से तुम्हें रिज़्क़ भी दिया जाएगा। तुम्हारी मदद भी होगी, तुम्हारी शिकस्ताहाली भी दूर होगी। *(तर्ग़ीब)*

(۱۶) وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِیْنَ ○ الَّذِیْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِیْنَ عَلٰی
مَاۤ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِیْمِی الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ○ (حج ع ۵)

16. आप ख़ुशख़बरी दीजिए उन आजिज़ी करने वाले मुसलमानों को, जो ऐसे हैं कि जब उनके सामने अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल डर जाते हैं और जो मुसीबतें उन पर पड़ती हैं उन पर सब्र करते हैं और नमाज़ को क़ायम रखने वाले हैं और जो हमने उनको दिया है उससे ख़र्च करते हैं।

फ़ायदा:- 'मुख़्बितीन' जिसका तर्जुमा 'आजिज़ी' करने वालों का लिखा गया है इसके तर्जुमे में उलमा के कई क़ौल हैं इसका असल तर्जुमा पस्ती की तरफ़ जाने वालों का है। कुछ उलमा ने इसका तर्जुमा ख़ुदाई अहकाम के सामने गरदन झुका देने वालों का किया है कि वे भी गरदन को नीचे की तरफ़ ले जाते हैं।

कुछ ने तवाज़ोअ् करने वालों का किया है कि वे तो गरदन झुकाने वाले हर वक़्त ही हैं।

हज़रत मुजाहिद रह० ने इसका तर्जुमा 'मुतमइन लोगों' से किया है।

हज़रत अम्र बिन औस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुख़्बितीन वे लोग हैं, जो किसी पर ज़ुल्म न करें और अगर उन पर ज़ुल्म किया जाए तो वे बदला न लें।

ज़हहाक रह० कहते हैं मुख़्बितीन मुतवाज़ेअ् लोग हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ि० से ज़िक्र किया गया कि यह जब हज़रत रबीअ् बिन ख़ुसैम रज़ि० को देखते तो फ़रमाते कि मैं तुम्हें देखता हूँ तो मुझे मुख़्बितीन याद आ जाते हैं।

(١٧) وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ○
اُولٰٓئِكَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ○ (مؤمنون ع ٤)

17. और जो लोग (अल्लाह की राह में) देते हैं, जो कुछ देते हैं और उस पर भी उन के दिल इससे डरते रहते हैं कि वे अल्लाह के पास जाने वाले हैं। यही लोग हैं जो नेकियों में दौड़ने वाले हैं और यही हैं वे लोग जो नेकियों की तरफ़ सबक़त करने वाले हैं।

फ़ायदा:- यानी बावजूद अल्लाह की राह में ख़र्च करने के इससे डरते रहते हैं कि देखिए अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां इन नेकियों का क्या हश्र हो, क़ुबूल होती हैं या नहीं। यह हक़ तआला शानुहू की ग़ायत अज़्मत और उलूवे मर्तबा (यानी ऊँचे दर्जे) की वजह से है। जो शख़्स जितना ऊँचे मर्तबे का होता है उतना ही उसका ख़ौफ़ ग़ालिब होता है ख़ास कर उस शख़्स के लिए जिसके दिल में वाक़ई अज़्मत हो तथा वे इससे भी डरते रहते हैं कि इसके ख़र्च करने में नीयत भी हमारी ख़ालिस है या नहीं। बहुत सी बार नफ़्स और शैतान के मक्र की वजह से आदमी किसी चीज़ को नेकी समझता रहता है और वह नेकी नहीं होती, जैसा की सूरः कहफ़ के आख़िरी रूकुअ् में इर्शाद है :-

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ○ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِى الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ○

'आप कह दीजिए कि हम तुम को ऐसे आदमी बताएं जो आमाल के एतिबार से सबसे ज़्यादा ख़सारे (घाटे) वाले हैं। ये वे लोग हैं जिनकी कोशिशें दुनिया में गयी गुज़री हो गयीं और वे समझते हैं कि हम अच्छे काम कर रहे हैं।'

हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि मोमिन नेकियां करके डरता है और मुनाफ़िक़ बुराईयां करके बे ख़ौफ़ होता है। **'फ़ज़ाइले हज'** में कितने ही वाक़िआत इस क़िस्म के ज़िक्र हो चुके हैं कि जिनके दिलों में हक़ तआला शानुहू की अज़्मत और जलाल कामिल दर्जे का होता है, वे ज़बान से लब्बैक कहते हुए इससे डरते हैं कि कहीं यह मर्दूद न हो जाए। हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं, 'या रसूलल्लाह ! वल्लज़ी न युअ्तून' (आयत) यह आयते शरीफ़ा उन लोगों के बारे में है कि एक आदमी चोरी करता है, ज़िना करता है, शराब

पीता है और दूसरे गुनाह करता है और इस बात से डरता है कि उसको अल्लाह की तरफ़ रूजूअ् करना है (यानी उसको अपने गुनाहों की वजह से हक़ तआला जल्ल शानुहू के हुज़ूर में पेश होने का डर होता है कि वहां जाकर क्या मुँह दिखाएगा) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, नहीं, बल्कि ये वे लोग हैं कि एक आदमी रोज़ा रखता है, सदक़ा देता है नमाज़ पढ़ता है और वह इसके बावजूद इससे डरता है कि वह उससे क़बूल न हो।

दूसरी हदीस में है, हज़रत आइशा रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, ये वे लोग हैं जो ख़ताएं करते हैं, गुनाह करते हैं, और वे डरते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया, नहीं बल्कि वे लोग हैं जो नमाज़ें पढ़ते हैं, रोज़े रखते हैं, सदक़े देते हैं और उनके दिल डरते रहते हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से नक़ल किया गया कि वे लोग आमाल करते हैं डरते हुए।

सईद बिन जुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि वे सदक़ात देते हैं और क़ियामत में अल्लाह जल्ल शानुहू के सामने खड़े होने से और हिसाब की सख़्ती से डरते हैं।

हज़रत हसन बसरी रह० से नक़ल किया गया कि ये वे लोग हैं जो नेक अमल करते हैं और इससे डरते हैं कि कहीं उन आमाल की वजह से भी अज़ाब से निजात न मिले। *(दुर्रे मंसूर)*

हज़रत ज़ैनुल आबिदीन अली बिन हुसैन रज़ि० जब वुज़ू करते तो चेहरे का रंग ज़र्द (पीला) हो जाता और जब नमाज़ को खड़े होते तो बदन पर कपकपी आ जाती, किसी ने इसकी वजह पूछी तो इर्शाद फ़रमाया, जानते भी हो, किसके सामने खड़ा होता हूँ। *(रौज़)*

'फ़ज़ाइले नमाज़ में अनेक वाक़िआत इस क़िस्म के ज़िक्र किए गए और 'हिकायाते सहाबा' रज़ि० का एक बाब मुस्तक़िल अल्लाह तआला जल्ल शानुहू से डरने वालों के बयान में है।

(١٨) وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ اَنْ يُّؤْتُوْٓا اُولِى الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ
وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ۗ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ
اللّٰهُ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○ (نور ع ٣)

18. और जो लोग तुममें (दीन के ऐतिबार से) बुज़ुर्गी वाले (और दुनिया के एतिबार से) वुसअत (गुंजाइश) वाले हैं वे इस बात की

क़सम न खाएं कि अह्ले क़राबत को और मसाकीन को और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को न देंगे और उनको यह चाहिए कि वे माफ़ कर दें और दरगुज़र कर दें, क्या तुम यह नहीं चाहते कि अल्लाह तआला तुम्हारे क़ुसूरों को माफ़ कर दे। (पस तुम भी अपने क़ुसूरवारों को माफ़ कर दो) बेशक अल्लाह तआला ग़फ़ूरूर्रहीम है।

फ़ायदा:- सन् 06 हि॰ में ग़ज़्वा-ए-बनिल मुस्तलिक़ के नाम से एक जिहाद हुआ है, जिसमें हज़रत आइशा रज़ि॰ भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हमराह थीं, उनकी सवारी का ऊँट अलग था, उस पर हौदज था। यह अपने हौदज में रहती थीं। जब चलने का वक़्त होता कुछ आदमी हौदज को उठाकर ऊँट पर बांधा देते थे, बहुत हल्का फुल्का बदन था उठाने वालों को इसका एहसास भी न होता था कि इस में कोई है या नहीं, इसलिए कि जब चार आदमी मिलकर हौदज को उठाएं उसमें कमसिन हल्की फुल्की औरत के वज़न का क्या पता चल सकता है। मामूल के मुताबिक़ एक मंज़िल पर क़ाफ़िला उतरा हुआ था। जब रवानगी का वक़्त हुआ तो लोगों ने उनके हौदज को बांध दिया। यह उस वक़्त इस्तिन्जे के लिए तशरीफ़ ले गयी थीं। वापस आयीं तो देखा कि हार नहीं है जो पहन रही थीं। यह उसको तलाश करने चली गयीं। पीछे यहां क़ाफ़िला रवाना हो गया। यह तंहा उस जंगल बयाबान में खड़ी रह गयीं। उन्होंने ख़्याल फ़रमाया कि रास्ते में जब हुज़ूर सल्ल॰ को मेरे न होने का इल्म होगा तो आदमी तलाश करने इसी जगह आयेगा, वह वहीं बैठ गयीं और जब नींद का ग़लबा हुआ तो सो गयीं। अपने नेक आमाल की वजह से दिली इत्मीनान तो हक़ तआला शानुहू ने इन सब हज़रात को कमाल दर्जे का अता फ़रमा ही रखा था। आजकल की कोई औरत होती, तो तन्हा जंगल बयाबान में रात को नींद आने का तो ज़िक्र ही क्या, ख़ौफ़ की वजह से रो कर चिल्ला कर सुबह कर देती।

हज़रत सफ़वान बिन मुअत्तल रज़ियाल्लाहु तआला अन्हु एक बुज़ुर्ग सहाबी थे जो क़ाफ़िले के पीछे इसलिए रहा करते थे कि रास्ते में गिरी पड़ी चीज़ की ख़बर रखा करें। वह सुबह के वक़्त जब उस जगह पहुँचें तो एक आदमी को पड़े देखा और चूँकि पर्दे के नाज़िल होने से पहले हज़रत आइशा रज़ि॰ को देखा था इसलिए यहां उनको पड़ा देख कर पहचान लिया और ज़ोर से -

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजि ऊन॰ पढ़ा।

उनकी आवाज़ से उनकी आँख खुली और मुँह ढक लिया। उन्होंने

अपना ऊँट बिठाया यह उस पर सवार हो गयीं और वह ऊँट की नकेल पकड़ कर ले गये और क़ाफ़िले में पहुँचा दिया।

अब्दुल्लाह बिन उबई जो मुनाफ़िक़ों का सरदार और मुसलमानों का सख़्त दुश्मन था उसको तोहमत लगाने का मौक़ा मिल गया और ख़ूब इसकी शोहरत की। उसके साथ कुछ भोले मुसलमान भी इस तज़्किरे में शामिल हो गये और अल्लाह की क़ुदरत और शान एक माह तक यह ज़िक्र तज़्किरे होते रहे। लोगों में कसरत से इस वाक़िए का चर्चा होता रहा और कोई वही (ख़ुदाई पैग़ाम) वग़ैरह हज़रत आईशा रज़ि॰ की बराअत[1] की नाज़िल न हुई। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों को इस हादसे का सख़्त सदमा था और जितना भी सदमा होना चाहिए था, वह ज़ाहिर है। हुज़ूर सल्ल॰ मर्दों से और औरतों से इस बारे में मश्विरा फ़रमाते थे, हालात की तह्क़ीक़ फ़रमाते थे, मगर यक्सूई की कोई भी सूरत न होती। एक माह के बाद सूरः नूर का एक मुस्तक़िल रूकूअ् क़ुरआन पाक में हज़रत आइशा रज़ि॰ की बराअत में नाज़िल हुआ, और अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से उन लोगों पर सख़्त इताब हुआ जिन्होंने बे दलील, बे सबूत इस तोहमत को फैलाया था। इस वाक़िए को शोहरत देने वालों में हज़रत मिस्तह रज़ि॰ एक सहाबी भी थे जो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ के रिश्तेदार थे और हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ उनकी ख़बर गीरी और मदद फ़रमाया करते थे। इस तोहमत के क़िस्से में उनकी शिर्कत से हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ को रंज हुआ और होना भी चाहिए था कि उन्होंने अपने होकर वे तह्क़ीक़ बात को फैलाया। इस रंज में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने क़सम खा ली कि मिस्तह रज़ि॰ की मदद न करेंगे। इस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई जो ऊपर लिखी गयी। रिवायात से मालूम होता है कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ के अलावा कुछ दूसरे सहाबा रज़ि॰ ने भी ऐसे लोगों की मदद से हाथ खींच लिया था, जिन्होंने इस तोहमत के वाक़िए में ज़्यादा हिस्सा लिया था।

हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि मिस्तह रज़ि॰ ने इसमें बहुत ज़्यादा हिस्सा लिया और हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ के रिश्तेदार थे, उन्हीं की परवरिश में रहते थे। जब बराअत नाज़िल हुई तो हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ ने क़सम खा ली कि उन पर ख़र्च न करेंगे, इस पर यह आयत 'व ला याअ्तलि' नाज़िल हुई और आयते शरीफ़ा के नाज़िल होने के बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ ने उनको अपनी परवरिश में फिर ले लिया।

1. यानी उस तोहमत से पाक होने के सिलसिले में।

एक दूसरी हदीस में है कि इस आयते शरीफ़ा के बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ ने जितना पहले से ख़र्च करते थे उसका दो गुना कर दिया।

एक और हदीस में है कि दो यतीम थे जो हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ की परवरिश में थे, जिनमें से एक मिस्तह रज़ि॰ थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ ने दोनों का नफ़्क़ा बंद करने की क़सम खा ली थी।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि सहाबा रज़ि॰ में कई आदमी ऐसे थे, जिन्होंने हज़रत आइशा रज़ि॰ के ऊपर बोहतान में हिस्सा लिया, जिसकी वजह से बहुत से सहाबा किराम रज़ि॰ जिनमें हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ भी हैं, ऐसे थे, जिन्होंने क़सम खा ली थी कि जिन लोगों ने इस बोहतान की इशाअत में हिस्सा लिया, उन पर ख़र्च न करेंगे। इस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई कि बुज़ुर्गी वाले और वुसअत वाले हज़रात इस की क़सम न खाएं कि सिलारहमी न करेंगे और जिस तरह पहले ख़र्च करते थे, उसी तरह ख़र्च न करेंगे।

(दुर्रे मंसूर)

किस क़दर मुजाहिदा-ए-अज़ीम है कि एक शख़्स किसी की बेटी की आबरूरेज़ी में झूठी बातें कहता फिरे और फिर वह उसकी इआनत (मदद) उसी तरह करे जिस तरह पहले से करता था, बल्कि उससे भी दो गुना कर दे।

(١٩) تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ○ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○ (سجدہ ع ۲)

19. रात को उन के पहलू बिस्तरों से अलाहिदा रहते हैं, इस तरह कि वे लोग अपने रब को (अज़ाब के) ख़ौफ़ से और (सवाब की) उम्मीद से पुकारते रहते हैं और हमारी दी हुई चीज़ों से ख़र्च करते हैं, पस कोई नहीं जानता कि ऐसे लोगों की आंखों की ठंडक का क्या क्या सामान ख़ज़ाना-ए-ग़ैब में मौजूद है। यह सब बदला है उनके नेक आमाल का।

फ़ायदा:- रात को उनके पहलू, बिस्तरों से अलाहिदा रहते हैं के मुतालिल्क़ उलमा-ए-तफ़्सीर के दो क़ौल हैं -

एक यह कि इससे मग़्रिब और इशा का दर्मियान मुराद है। बहुत से आसार से इस की ताईद होती है। हज़रत अनस रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि यह आयते शरीफ़ा हमारे बारे में नाज़िल हुई। हम अंसार की जमाअत मग़्रिब की नमाज़

पढ़कर अपने घर वापस न होते थे, उस वक़्त तक कि हुज़ूर सल्ल॰ के साथ इशा की नमाज़ न पढ़ लें। इस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई।

एक और रिवायत में हज़रत अनस रज़ि॰ ही से नक़्ल किया गया कि मुहाजिरीन सहाबा रज़ि॰ की एक जमाअत का मामूल यह था कि वे मग़्रिब के बाद से इशा तक नवाफ़िल पढ़ा करते थे, इस पर यह आयत नाज़िल हुई।

हज़रत बिलाल रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हम लोग मग़्रिब के बाद बैठे रहते और सहाबा रज़ि॰ की एक जमाअत मग़्रिब से इशा तक नमाज़ पढ़ती थी। उस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई।

अबदुल्लाह बिन ईसा रज़ि॰ से भी यही नक़्ल किया गया कि अंसार की एक जमाअत मग़्रिब से इशा तक नवाफ़िल पढ़ती थी उस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई।

दूसरा क़ौल यह है कि इससे तहज्जुद की नमाज़ मुराद है। हज़रत मुआज़ रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्ल॰ का इर्शाद नक़्ल करते हैं कि इससे रात का क़ियाम मुराद है। एक हदीस में मुजाहिद रज़ि॰ से नक़्ल किया गया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रात के क़ियाम का ज़िक्र फ़रमाया और हुज़ूर सल्ल॰ की आंखों से आंसू जारी हो गये और यह आयते शरीफ़ा तिलावत फ़रमायी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ फ़रमाते हैं, तौरात में लिखा है जिन लोगों के पहलू रात को बिस्तरों से दूर रहते हैं उनके लिए हक़ तआला शानुहू ने ऐसी चीज़ें तैयार कर रखी हैं जिनको न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी आदमी के दिल पर उनका वस्वसा भी पैदा हुआ, न उनको कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता जानता है, न कोई नबी, और रसूल, और इसका ज़िक्र क़ुरआन पाक की इस आयते शरीफ़ा में है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल करते हैं कि अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है कि मैंने अपने नेक बंदों के लिए वे चीज़ें तैयार कर रखी हैं जिनको न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना, न किसी के दिल पर उनका वस्वसा गुज़रा।

रौज़ुर्रियाहीन वग़ैरह में सैकड़ों वाक़िआत ऐसे लोगों के ज़िक्र हैं जो सारी रात मौला की याद में रो-रो कर गुज़ार देते थे।

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह॰ का चालीस साल तक इशा के वुज़ू से

सुबह की नमाज़ पढ़ना ऐसी मारूफ़ चीज़ है, जिससे इंकार की गुंजाइश नहीं और माहे मुबारक में दो क़ुरआन शरीफ़ रोज़ाना एक दिन का, एक रात का ख़त्म करना भी मारूफ़ है।

हज़रत उस्मान रज़ि॰ का सारी रात जागना और एक रक्अत में पूरा क़ुरआन शरीफ़ पढ़ लेना भी मशहूर वाक़िआ है।

हज़रत उमर रज़ि॰ बहुत सी बार इशा की नमाज़ पढ़ कर घर में तशरीफ़ ले जाते और घर जाकर नमाज़ शुरू कर देते और नमाज़ पढ़ते पढ़ते सुबह कर देते।

हज़रत तमीम दारी रज़ि॰ मशहूर सहाबी हैं। एक रक्अत में तमाम क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना और कभी एक ही आयत को सुबह तक बार बार पढ़ते रहना उनका मामूल था।

हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ि॰ सोने के लिए लेटते और इधर उधर करवटें बदल कर यह कह कर खड़े हो जाते या अल्लाह जहन्नम के ख़ौफ़ ने मेरी नींद उड़ा दी और सुबह तक नमाज़ पढ़ते रहते।

हज़रत उमैर रज़ि॰ एक हज़ार रक्अत, नफ़्ल और एक लाख मर्तबा तस्बीह रोज़ाना पढ़ते।

हज़रत उवैस क़र्नी रह॰ मशहूर ताबिई हैं। हुज़ूर सल्ल॰ ने भी उनकी तारीफ़ फ़रमायी और उनसे दुआ कराने की लोगों को तर्ग़ीब दी। किसी रात को फ़रमाते कि आज की रात रूकूअ् करने की है और सारी रात रूकूअ् में गुज़ार देते। किसी रात फ़रमाते कि आज की रात सज्दे की है और सारी रात सज्दे में गुज़ार देते थे।

(इक़ामतुल् हुज्जः)

ग़रज़ इन हज़रात के वाक़िआत रात भर मालिक की याद में महबूब की तड़प में गुज़ार देने के इतने ज़्यादा हैं कि उनका एहाता ना मुम्किन है। यही हज़रात हक़ीक़तन इस शेर के मिस्दाक़ थे -

हमारा काम है रातों को रोना यादे दिलबर में,
हमारी नींद है महवे ख़्याले यार हो जाना !!

काश हक़ तआला शानुहू इन हज़रात के जज़्बात का ज़रा सा साया इस नापाक पर भी डाल देता।

(٢٠) قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ (سبا ع ٥)

20. आप कह दीजिए कि मेरा रब अपने बंदों में से जिस को चाहे, रोज़ी की वुस्अत अता करता है और जिस को चाहे, रोज़ी की तंगी देता है और जो कुछ तुम (अल्लाह के रास्ते में) ख़र्च करोगे, अल्लाह तआला उसका बदला अता करेगा और वह सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है।

फ़ायदाः- यानी तंगी और फ़राख़ी अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से है, तुम्हारे ख़र्च को रोकने से फ़राख़ी नहीं होती और ख़र्च ज़्यादा करने से तंगी नहीं होती, बल्कि अल्लाह के रास्ते में जो ख़र्च किया जाए उसका बदला आख़िरत में तो मिलता ही है दुनिया में भी अक्सर उसका बदला मिलता है।

एक हदीस में है कि हज़रत जिब्रील अलैहि॰ ने अल्लाह जल्ल शानुहू का यह इर्शाद नक़्ल किया, मेरे बन्दो! मैं ने तुमको अपने फ़ज़्ल से अता किया और तुम से क़र्ज़ मांगा, पस जो शख़्स मुझे अपनी ख़ुशी और रज़ा व रग्बत से देगा, मैं उसका बदल दुनिया में जल्दी दूँगा, और आख़िरत में उसके लिए ज़ख़ीरा बना कर रखूँगा। और जो ख़ुशी से न देगा, बल्कि उससे मैं अपनी दी हुई चीज़ जबरन छीन लूँगा और वह उस पर सब्र करेगा और सवाब की उम्मीद रखेगा, उसके लिए मैं अपनी रहमत वाजिब कर दूँगा और उसको हिदायत याफ़्ता लोगों में लिखूँगा और उसके लिए अपने दीदार को मुबाह कर दूँगा। *(कन्ज़)*

किस क़दर हक़ तआला शानुहू का एहसान है कि अपनी ख़ुशी से न देने की सूरत में भी अगर बंदा जब्र से लिए जाने में भी सब्र कर ले तो उसके लिए भी अज्र फ़रमा दिया, हालांकि जब वह हक़ तआला की अता की हुई चीज़ ख़ुशी से वापस नहीं करता, जबरन उससे ली जाती है। तो फिर अज्र का क्या मतलब, लेकिन हक़ तआला शानुहू के एहसानात का कोई शुमार हो सकता है?

हज़रत हसन फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस आयते शरीफ़ा के बारे में फ़रमाया कि तुम जो कुछ अपने अह्ल व अयाल पर ख़र्च करो, बग़ैर इस्राफ़ (फ़ुज़ूल ख़र्ची) और बग़ैर कंजूसी के वह सब अल्लाह के रास्ते में है।

हज़रत जाबिर रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल करते हैं कि आदमी जो कुछ शरअी नफ़्क़ा में ख़र्च करे अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां उसका बदल है, सिवाय इसके कि जो तामीर में ख़र्च किया हो या गुनाहों में।

हज़रत जाबिर रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि हर एहसान सदक़ा है और जो कुछ आदमी अपने नफ़्स पर और अपने अहल व अयाल पर ख़र्च करे वह सदक़ा है और जो कुछ अपनी आबरू की हिफ़ाज़त पर ख़र्च करे वह सदक़ा है और मुसलमान जो कुछ (शरीअत के मुवाफ़िक़) ख़र्च करता है, वह सदक़ा है, अल्लाह जल्ल शानुहू उसके बदल के ज़िम्मेदार हैं, मगर वह ख़र्च जो गुनाह में हो, या तामीर में।

हकीम तिर्मिज़ी रह॰ ने हज़रत ज़ुबैर रज़ि॰ से एक मुफ़स्सल क़िस्सा नक़ल किया जो अहादीस के ज़ैल में नं॰ 12 पर मुफ़स्सल आ रहा है। अल्लामा सुयूती रह॰ ने दुर्रे मंसूर में उसको हकीम तिर्मिज़ी की रिवायत से मुफ़स्सल नक़ल किया है, लेकिन खुद उन्होंने **'लआलिल् मस्नूअः'** में उसको बहुत मुख़्तसर तौर पर इब्ने अदी रह॰ की रिवायत से मौज़ूआत में नक़ल किया है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि रोज़ाना सुबह को दो फ़रिश्ते हक़ तआला शानुहू से दुआ करते हैं। एक दुआ करता है, ऐ अल्लाह! ख़र्च करने वाले को उसका बदल अता फ़रमा। दूसरा अर्ज़ करता है ऐ अल्लाह! रोक के रखने वाले के माल को हलाक कर। अहादीस के तहत में यह हदीस नं॰ 2 पर आ रही है। और तजुर्बे में भी अक्सर यही आया है कि जो हज़रात सख़ावत करते हैं अल्लाह जल्ल शानुहू के दरबार से फ़ुतूहात का दरवाज़ा उनके लिए हर वक़्त खुला रहता है और जो लोग कंजूसी से जोड़ जोड़ कर रखते हैं अक्सर कोई आसमानी आफ़त, बीमारी, मुक़द्दमा चोरी वग़ैरह ऐसी चीज़ पेश आ जाती है जिससे बर्सों का अन्दोख़्ता दिनों में ज़ाया हो जाता है और अगर किसी के दूसरे नेक आमाल की बरकत से और उसकी नेक नीयती से उस पर कोई ऐसा ख़र्च नहीं पड़ता तो नालायक़ औलाद बाप के अन्दोख़्ता को जो उसकी उम्र भर की कमाई थी, महीनों में बराबर कर देती है।

हज़रत अस्मा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि मुझ से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि खूब ख़र्च किया कर और गिन गिन कर मत रख कि अल्लाह जल्ल शानुहू तुझे भी गिन गिन कर अता करेगा और जमा करके मत रख कि अल्लाह जल्ल शानुहू तुझ से भी जमा कर के रखने लगेगा। अता कर जितना तुझ से हो सके। *(मिश्क़ात, बुख़ारी, मुस्लिम)*

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत बिलाल

रज़ि० के पास तशरीफ़ ले गये। उनके पास एक ढेरी खजूरों की रखी थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया यह क्या है? उन्होंने अर्ज़ किया कि आइन्दा की ज़रूरत के लिए रख लिया है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि तुम इससे नहीं डरते कि इसका धुआं जहन्नम की आग में देखो। बिलाल खूब ख़र्च करो और अर्श के मालिक से कमी का ख़ौफ़ न करो। *(मिश्क़ात)*

यहां ज़रूरत के दर्जे में भी आइंदा के लिए ज़ख़ीरा रखने पर इताब है और जहन्नम का धुआं देखने की वईद है। हज़रत बिलाल रज़ि० के शायाने शान यही चीज़ थी, इसलिए कि यह उन आली मर्तबा लोगों में हैं, जिनके लिए हुज़ूर सल्ल० इसको गवारा न फ़रमा सकते थे कि उनको कल का फ़िक्र हो और उनको अपने मालिक पर इसका पूरा भरोसा न हो कि जिसने आज दिया वह कल को भी देगा? हर शख़्स की एक शान और उसका एक मर्तबा हुआ करता है। "ह-सनातुल् अब्रारि सय्यिआतुल् मुक़र्रबीन्" मशहूर कहावत है कि आमी नेक लोगों के लिए जो चीज़ें नेकियां हैं मुक़र्रब लोगों की शान में वे भी कोताहियां शुमार हो जाती हैं। बहुत से वाक़िआत इसकी नज़ीरें हैं।

बहरहाल माल रखने के वास्ते हरगिज़ नहीं, जमा करने की चीज़ बिल्कुल नहीं है। यह सिर्फ़ ख़र्च करने के वास्ते पैदा हुआ है, अपनी ज़ात पर कम से कम और दूसरों पर ज़्यादा से ज़्यादा ख़र्च करना इसका फ़ायदा है, लेकिन यह बात निहायत ही अहम और ज़रूरी है कि हक़ तआला शानुहू के यहां सारा मदार नीयत पर ही है। 'इन्न-मल् अअ्मालु बिन्निय्याति' मशहूर हदीस है कि आमाल का मदार नीयत पर ही है जहां नेक नीयती हो, महज़ अल्लाह के वास्ते ख़र्च करना हो, चाहे अपने नफ़्स पर हो, चाहे अहल व आयाल पर, चाहे अक़रबा (क़रीबी लोगों) पर, चाहे अग़्यार (ग़ैरों) पर, वह बरकात व समरात लाए बग़ैर नहीं रह सकता और जहां बद नीयती हो, शोहरत और इज़्ज़त मक़्सूद हो, नेक नामी और दूसरी अग़राज़ मिल गयी हों, वहां नेकी बर्बाद गुनाह लाज़िम हो जाता है। वहां बरकत का सवाल ही नहीं रहता।

(۲۱) اِنَّ الَّذِیْنَ یَتْلُوْنَ کِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِیَةً یَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ○ لِیُوَفِّیَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَیَزِیْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ○ (فاطر ۴)

21. जो लोग क़ुरआन पाक की तिलावत करते रहते हैं और नमाज़ को क़ायम रखते हैं और जो कुछ हमने उनको दिया है, उसमें से

पोशीदा और एलानिया ख़र्च करते हैं, वे ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं जिसमें घाटा नहीं है और यह इसलिए ताकि हक़ तआला शानुहू उनको उनके आमाल की उजरतें भी पूरी-पूरी अता करे और इसके अलावा अपने फ़ज़्ल से (बतौर इनाम के) और ज़्यादा अता करे। बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला, बड़ा क़दरदान है।

फ़ायदा:- हज़रत क़तादा रज़ि० फ़रमाते हैं कि ऐसी तिजारत से, जिस में घाटा नहीं, जन्नत मुराद है, जो न कभी बर्बाद होगी, न ख़राब होगी और अपने फ़ज़्ल से ज़्यादती से मुराद वह है जिसको (क़ुरआन पाक में) 'व ल-दै ना मज़ीद' से ताबीर किया है। *(दुर्रे मंसूर)*

यह आयत जिसकी तरफ़ हज़रत क़तादा रज़ि० ने इशारा किया है सूर: 'क़ाफ़' की आयत है। जिसमें अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है:-

لَهُمْ مَا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ○

इन (जन्नत वालों) के लिए जन्नत में हर वह चीज़ मौजूद होगी जिसकी ये ख़्वाहिश करेंगे और (उनकी चाही हुई चीज़ों के अलावा) हमारे पास उनके लिए और भी ज़्यादा है (जो हम उनको अता करेंगे) और इसकी तफ़्सीर में अहादीस में बहुत ही अजीब अजीब चीज़ें ज़िक्र की गयीं, जो बड़ी तफ़्सील तलब हैं और इनमें सब से ऊँची चीज़ हक़ तआला शानुहू की रज़ा का परवाना है और बार-बार की ज़ियारत जो खुश किस्मत लोगों को नसीब होगी और यह इतनी बड़ी दौलत कैसी कम मेहनत चीज़ों पर मुरत्तब है। जिनमें कोई मशक़्क़त नहीं उठानी पड़ती। अल्लाह की राह में कसरत से ख़र्च करना, नमाज़ को क़ायम रखना और क़ुरआन पाक की तिलावत कसरत से करना, जो खुद दुनिया में भी लज़्ज़त की चीज़ है, क़ुरआन पाक की कसरते तिलावत के कुछ वाक़िआत अभी गुज़र चुके हैं और कुछ वाक़िआत 'फ़ज़ाइले क़ुरआन' में ज़िक्र किये गये, उनको ग़ौर से देखना चाहिये।

(۲۲) وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ ۪ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ○ (شوریٰ ع ۴)

22. और जिन लोगों ने अपने रब का हुक्म माना और नमाज़ को क़ायम किया और उनका हर मुहतम बिश्शान[1] काम मश्विरे से होता है

1. शानदार।

और जो हमने उनको दिया है, उससे वह ख़र्च करते रहते हैं (ऐसे लोगों के लिये हक़ तआला शानुहू के यहां जो अताया हैं वे दुनिया के साज़ व सामान से बदरजहा बेहतर और पायदार हैं।)

फ़ायदा:- इन आयात में कामिल लोगों की बहुत सी सिफ़ात ज़िक्र की हैं और उनके लिए हक़ तआला शानुहू ने अपने पास जो है और वह दुनिया की नेमतों से बदरजहा बेहतर है उसका वायदा फ़रमाया है। उलमा ने लिखा है कि इन आयात में:-

लिल्लज़ी न आ म नू व अला रब्बिहिम य-त-वक्कलून॰

से तर्तीब वार हज़रात ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की ख़ुसूसी सिफ़ात और वक़्ती हालात की तरफ़ इशारा है और हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ि॰ से लेकर हज़रत अली रज़ि॰, और हज़रात हसनैन रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन के ज़माने तक के अह्वाल से ख़िलाफ़त की ज़ीनत की तरफ़ इशारा है और उसी तर्तीब से सिफ़ात व अह्वाल पर तंबीह है जिस तर्तीब से उन हज़रात की ख़िलाफ़त हुई और इन आयात में इशारे के तौर पर आख़िरत में इन हज़रात ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन के लिए बहुत कुछ अताया का वायदा है और अल्फ़ाज़ के उमूम से उन सब लोगों के लिए वायदा है जो इन सिफ़ात को अपने अंदर पैदा करने का एहतिमाम करें। काश! हम मुसलमानों को दीन का शौक़ होता और क़ुरआन और हदीस के बताए हुए बेहतरीन अख़्लाक़ को तलाश करके अपनाने का जज़्बा होता, मगर हमारे अख़्लाक़ इस क़दर गिरते जा रहे हैं बल्कि गिर चुके हैं कि उनको देखकर ग़ैर मुस्लिमों को इस्लाम से नफ़रत होती है। इन ग़रीबों को यह मालूम नहीं कि इस्लामी अख़्लाक पर आज कल मुसलमान चल ही नहीं रहे हैं। वे मुसलमान के जो अख़्लाक़ देखते हैं उन्हीं को इस्लामी अख़्लाक़ समझते हैं। **फ़ इल ल्लाहिल मुश्तका॰**

(۲۳) وَفِیْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۝ (ذاریات ع۱)

23. और उनके मालों में सवाल करने वालों का और (सवाल न करने वाले) नादार का हक़ है।

फ़ायदा:- ऊपर से कामिल ईमान वालों की ख़ास सिफ़तें बयान हो रही हैं जिनके ज़ैल (तहत) में उनकी एक ख़ास सिफ़त यह भी है कि वे सदक़ात इतने कसरत और ऐसे एहतिमाम से देते हैं कि गोया यह उनके ज़िम्मे हक़ हो गया है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि उनके अम्वाल में हक़ है यानी ज़कात के अलावा जिस से वे सिला रहमी करते हैं और मेहमानों की दावत करते हैं और महरूम लोगों की मदद करते हैं।

मुजाहिद रज़ि० कहते हैं कि इससे ज़कात के अलावा मुराद है।

इब्राहीम रज़ि० कहते हैं कि वे लोग अपने मालों में ज़कात के अलावा और भी हक़ समझते हैं।

इब्ने अब्बास रज़ि० कहते हैं कि महरूम वह परेशान हाल है जो दुनिया का तालिब हो और दुनिया उससे मुँह फेरती हो और आदमियों से सवाल न करता हो। एक और हदीस में उनसे नक़ल किया गया कि महरूम वह है जिसका कोई हिस्सा बैतूल माल में न हो।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि महरूम वह तंगी में पड़ा हुआ शख़्स है जिसकी कमाई उसको काफ़ी न हो।

अबू क़ुलाबा रज़ि० कहते हैं कि यमामा में एक आदमी था एक मर्तबा सैलाब आया और उसका सब कुछ माल व मताअ् बहा कर ले गया। एक सहाबी रज़ि० ने फ़रमया कि इसको महरूम कहते हैं, इसकी मदद की जाए।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि मिस्कीन वह शख़्स नहीं है जिसको एक एक लुक़्मा दर बदर फिराता है, यानी दरवाज़ों से भीख मांगता है। असल मिस्कीन वह है जिसके पास न खुद इतना माल हो जो उसकी हाजत को पूरा करे और न लोगों को उसका हाल मालूम हो कि उसकी मदद की जाए। यही शख़्स दरअसल महरूम है।

हज़रत फ़ातिमा बिन्त क़ैस रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस आयते शरीफ़ा के मुताल्लिक़ सवाल किया तो हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि माल में ज़कात के अलावा और भी हक़ हैं। *(दुर्रे मंसूर)*

यह हदीस इसी फ़स्ल की अहादीस में नं० 16 पर आएगी, इसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयते शरीफ़ा पढ़ी –

لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ (بقرہ ۲۲۴)

इस आयते शरीफ़ा का कुछ हिस्सा नं० 2 पर गुज़र चुका है। इस आयत में मसाकीन वग़ैरह के देने का जिक्र अलाहिदा है और ज़कात देने का ज़िक्र

अलाहिदा है, जिसमें इस बात की तर्ग़ीब दी गयी है कि आदमी को सिर्फ़ ज़कात ही पर किफ़ायत न करना चाहिए, बल्कि इसके अलावा भी अपने माल को अल्लाह के रास्ते में कसरत से ख़र्च करना चाहिये। मगर आज हम लोगों के लिए ज़कात का ही अदा करना वबाल हो रहा है कितने मुसलमान ऐसे हैं जो ज़कात को भी अदा नहीं करते, हाँ शादी और तक़रीबात की लग्व (बेकार) रस्मों में घर भी गिरवी रख देंगे जहां दुनिया में माल बर्बाद हो और आख़िरत में गुनाह का वबाल हो।

(۲۴) اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ○ (حدید ع ۱)

24. तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और जिस माल में उसने तुमको दूसरों का क़ायम मक़ाम बनाया है, उसमें से (उसकी राह में) ख़र्च करो। जो लोग तुम में से ईमान लाए और (उन्होंने अल्लाह की राह में) ख़र्च किया, उनके लिए बहुत बड़ा अज्र है।

फ़ायदा:- क़ायम मक़ाम का मतलब यह है कि यह माल पहले किसी और के पास था, अब कुछ रोज़ के लिये तुम्हारे पास है, तुम्हारी आंख बंद हो जाने के बाद किसी और के पास चला जायेगा। ऐसी हालत में इसको जोड-जोड़ कर रखना बेकार है। यह बे मुरव्वत माल न सदा किसी के पास रहा न रहेगा। खुश नसीब है वह जो इसको अपने पास रखने की तद्बीर कर ले और वह सिर्फ़ यही है कि इसको अल्लाह जल्ल शानुहू के बैंक में जमा करा दें, जिसमें न ज़ाया होने का अन्देशा है, न छूट जाने का ख़तरा है और दुनिया में रहते हुए हर वक़्त ख़तरा ही ख़तरा है और आजकल तो क़ुदरत ने आंखों से दिखा दिया कि बड़े बड़े महल, बड़ी बड़ी जागीरें साज़ व सामान सब का सब खड़े खड़े हाथ से निकलकर दूसरों के क़ब्ज़े में आ गया। कल तक जिन मकानात के बिना किसी और के साझे खुद मालिक थे, आज दूसरों को अपनी आँखों से अपना जान शीन उनमें देखते हैं, फिर भी इब्रत हासिल नहीं होती।

(۲۵) وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ (حدید ع ۱)

25. और तुम्हें क्या हो गया, क्यों नहीं ख़र्च करते अल्लाह के रास्ते में, हालांकि सब आसमान-ज़मीन आख़िर में अल्लाह ही की मीरास है। जो लोग मक्का मुकर्रमा के फ़त्ह होने से पहले अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर चुके हैं और जिहाद कर चुके हैं, वे बराबर नहीं हो सकते (उन लोगों के जिनका ज़िक्र आगे है, बल्कि) वे बढ़े हुए हैं दर्जे में उन लोगों से जिन्होंने फ़त्हे मक्का के बाद ख़र्च किया और जिहाद किया और अल्लाह तआला ने सवाब का वायदा तो सब ही से कर रखा है (चाहे फ़त्हे मक्का से पहले ख़र्च और जिहाद किया हो या बाद में) और अल्लाह तआला को तुम्हारे आमाल की पूरी ख़बर है।

फ़ायदा:- अल्लाह तआला की मीरास होने का मतलब यह है कि जब सब आदमी मर जायेंगे तो आख़िर में आसमान ज़मीन, माल मताअ् सब उसी का रह जायेगा कि उस पाक ज़ात के सिवा कोई भी बाक़ी न रहेगा तो जब सब कुछ सबको छोड़ना ही है तो फिर अपनी खुशी से अपने हाथ से क्यों न ख़र्च करें कि इसका सवाब भी मिले, इसके बाद आयते शरीफ़ा में इस पर तंबीह की गयी कि जिन लोगों ने फ़त्हे मक्का से पहले अल्लाह तआला के काम पर ख़र्च किया या जिहाद किया, उनका मर्तबा बढ़ा हुआ है उन लोगों से जिन्होंने फ़त्हे मक्का के बाद ख़र्च किया या जिहाद किया इसलिए कि फ़त्ह से पहले एहतियाज ज़्यादा थी और जो चीज़ जितनी ज़्यादा हाजत के वक़्त ख़र्च की जाएगी उतना ही ज़्यादा सवाब होगा, जैसा कि सिलसिला-ए-अहादीस में नं॰ 13 पर आ रहा है।

लोगों को ज़रूरत के वक़्त बहुत ज़्यादा ख़्याल करना चाहिए और ऐसे वक़्त को जिसमें दूसरों को ज़रूरत हो अपने ख़र्च करने के लिए बहुत ग़नीमत समझना चाहिए। हक़ तआला शानुहू ने सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ में भी यह तफ़रीक़ फ़रमा दी कि जिन हज़रात ने फ़त्हे मक्का से पहले ख़र्च किया उनके सवाब को बहुत ज़्यादा बढ़ा दिया, इसी तरह हमेशा ख़्याल रखना चाहिये कि किसी की ज़रूरत के वक़्त उस पर ख़र्च करना बहुत ऊँची चीज़ है।

(۲۶) مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَیُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗۤ اَجْرٌ كَرِیْمٌ ۚ (حدید ع۲)

26. कौन शख़्स ऐसा है जो अल्लाह जल्ल शानुहू को क़र्ज़े हसना दे, फिर अल्लाह तआला उसके सवाब को उसके लिए बढ़ाता चला जाये और उसके लिए बेहतरीन बदला है।

फ़ायदा:- नं॰ 5 पर एक आयते शरीफ़ा इसके मयानों जैसी गुज़र चुकी

है, ख़ास एहतिमाम की वजह से इस मज़मून को दोबारा इर्शाद फ़रमाया है और कुरआने पाक में बार बार इस पर तंबीह की जा रही है कि आज अल्लाह के रास्ते में ख़र्च का दिन है। जो ख़र्च करना है कर लो मरने के बाद हसरत के सिवा कुछ नहीं है।

(۲۷) اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ○ (حدید ع ۲)

27. बेशक सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें (और ये सदक़ा देने वाले) अल्लाह तआला जल्ल शानुहू को क़र्ज़ा-ए-हस्ना दे रहे हैं, उनका सवाब बढ़ाया जायेगा और उनके लिए नफ़ीस अज्र है।

फ़ायदा:- यानी जो लोग सदक़ा करते हैं वे हकीक़त में अल्लाह जल्ल शानुहू को क़र्ज़ देते हैं, इसलिए कि यह भी क़र्ज़ की तरह से सदक़ा देने वालों को वापस मिलता है। पस यह बहुत ज़्यादा मुआवज़ा और बदला लेकर ऐसे वक़्त में वापस होगा जो वक़्त सदक़ा करने वाले की सख़्त हाजत और सख़्त ज़रूरत और सख़्त मजबूरी का होगा। लोग शादियों के वास्ते, सफ़रों के वास्ते और दूसरी ज़रूरतों के वास्ते थोड़ा-थोड़ा जमा करके रखते हैं कि फ़लां ज़रूरत का वक़्त आ रहा है औलाद की शादी करना है, इसके लिए हर वक़्त फ़िक्र में लगे रहते हैं। और जो गुंजाइश मिले कुछ न कुछ कपड़ा ज़ेवर वग़ैरह ख़रीद कर डालते रहते हैं कि उस वक़्त दिक़्क़त न हो। आख़िरत का वक़्त तो ऐसी सख़्त हाजत और ज़रूरत का है कि उस वक़्त न किसी से ख़रीदा जा सकता है, न क़र्ज़ लिया जा सकता है, न भीख मांगी जा सकती है ऐसे अहम और कठिन वक़्त के वास्ते तो जितना भी ज़्यादा से ज़्यादा मुम्किन हो जमा करते रहना निहायत ही दूरअंदेशी और कार आमद बात है। थोड़ा थोड़ा जमा करते रहना यहां तो मालूम भी न होगा और वहां वह पहाड़ों की बराबर मिलेगा।

(۲۸) وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُا الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ○ (حشر ع ۱)

28. (और इसमें उन लोगों का भी हक़ है) जो लोग दारूल

इस्लाम में (यानी मदीना मुनव्वरा में पहले से रहते थे) और ईमान में उन (मुहाजिरीन के आने) से पहले से क़रार पकड़े हुए हैं (यानि इन मुहाजिरीन के आने से पहले ही वे ईमान ले आये थे और ये ऐसी ख़ूबी के लोग हैं कि) जो लोग उनके पास हिजरत करके आते हैं उनसे ये लोग (यानि अंसार) मुहब्बत करते हैं और मुहाजिरीन को जो कुछ मिलता है उससे ये अपने दिलों में कोई ग़रज़ नहीं पाते (कि उसको लेना चाहें या उस पर रश्क करें) और इन मुहाजिरीन को अपने ऊपर तर्जीह देते हैं चाहे खुद उन पर फ़ाक़ा ही क्यों न हो और (हक़ यह है कि) जो शख़्स अपनी तबीअत के लालच से महफ़ूज़ रहे वही लोग फ़लाह पाने वाले हैं।

फ़ायदा:- ऊपर की आयात में बैतुलमाल के मुस्तहिक़्क़ीन का ज़िक्र हो रहा है कि किन किन लोगों का उसमें हक़ है, मिनजुम्ला उनके इस आयते शरीफ़ा में अंसार का ज़िक्र है और उनके खुसूसी औसाफ़ की तरफ़ इशारा है, जिनमें से एक यह है कि उन्होंने अपने घर में रह कर ईमान और कमालात हासिल किये हैं और अपने घर रह कर कमालात का हासिल करना आमतौर से मुश्किल हुआ करता है, दुन्यवी धंधे और दूसरे उमूर अक्सर आड़ बन जाते हैं। और दूसरी ख़ास सिफ़त अंसार की यह है कि ये लोग मुहाजिरीन से बेहद मुहब्बत करते हैं।

इस्लाम की इब्तिदाई तारीख़ का जिसको इल्म है वह इन हज़रात के हालात और इनकी मुहब्बत के वाक़िआत से हैरत में रह जाता है। कुछ वाक़िआत 'हिकायाते सहाबा' में भी गुज़र चुके हैं। एक वाक़िआ मिसाल के तौर पर यहां लिखता हूँ कि -

जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिजरत करके मदीना तैयबा तशरीफ़ लाये तो मुहाजिरीन और अंसार के दर्मियान में हुज़ूर सल्ल॰ ने भाई चारा इस तरह फ़रमा दिया था कि हर मुहाजिर का एक अंसारी के साथ खुसूसी जोड़ पैदा कर दिया था और एक एक मुहाजिर को एक एक अंसारी का भाई बना दिया था इसलिए कि हज़राते मुहाजिरीन परदेसी हज़रात हैं उनको अजनबी जगह हर क़िस्म की मुश्किल पेश आयेगी। अंसार मुक़ामी हज़रात हैं वे अगर उन लोगों की ख़ास तौर से ख़बरगीरी और मुआवनत (मदद) करेंगे तो उनको सहूलियतें पैदा हो जाएंगी। कैसा बेहतरीन इंतिज़ाम था हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कि इसमें मुहाजिरीन को भी हर क़िस्म की सहूलियत हो गई और अंसार को भी दिक़्क़त न हुई कि एक शख़्स की ख़बरगीरी हर शख़्स

को आसान है, इसी सिलसिले में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ खुद अपना क़िस्सा बयान फ़रमाते हैं कि जब हम लोग मदीना तैयबा आये तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे और सअद बिन रबीअ् रज़ि॰ के दर्मियान भाई बन्दी का रिश्ता जोड़ दिया। सअद बिन रबीअ् रज़ि॰ ने मुझसे कहा कि मैं अंसार में सबसे ज़्यादा मालदार हूँ मेरे माल में से आधा तुम ले लो और मेरी दो बीवियां हैं, उनमें से भी तुम्हें जो पसंद हो, मैं उसको तलाक़ दे दूँ, जब उसकी इद्दत पूरी जो जाए तुम उससे निकाह कर लेना। *(बुख़ारी)*

यज़ीद बिन असम रज़ि॰ कहते हैं कि अंसार ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दख़्वास्त की कि हम सब की ज़मीनें मुहाजिरीन पर आधी आधी बांट दीजिए। हुज़ूर सल्ल॰ ने इस को क़ुबूल नहीं फ़रमाया बल्कि यह इर्शाद फ़रमाया कि खेती वग़ैरह में ये लोग काम करेंगे और पैदावार में हिस्सेदार होंगे। *(दुर्रे मंसूर)*

कि इनकी मेहनत से तुमको मदद मिलेगी और तुम्हारी ज़मीन से इनको मदद मिलेगी। इस क़िस्म के ताल्लुक़ात और आपस की मुहब्बत महज़ दीनी बिरादरी पर आज अक़्ल में भी मुश्किल से आएगी। अल्लाह तआला की शान है कि आज वह मुसलमान जिसका खुसूसी इम्तियाज़ ईसार और हमदर्दी थी महज़ खुद ग़रज़ी और नफ़्स परवरी में मुब्तला है दूसरों को जितनी भी तक्लीफ़ पहुँच जाए अपने को राहत मिल जाए। कभी मुसलमान का शेवा यह था कि खुद तक्लीफ़ उठाए दूसरों को राहत पहुँच जाए। मुसलमानों की तारीख़ इससे भरी पड़ी है। एक बुज़ुर्ग की बीवी बहुत ज़्यादा बदखुल्क़ थीं हर वक़्त तक्लीफ़ें देती थीं। किसी ने उनसे अर्ज़ किया कि आप उसको तलाक़ दे दीजिए। फ़रमाया मुझे यह ख़ौफ़ है कि फिर यह किसी दूसरे से निकाह करेगी और इसकी बद खुल्क़ी से उसको तक्लीफ़ पहुँचेगी। *(एहया)*

कैसी बारीक चीज़ है। आज हम में से भी कोई इसलिये तक्लीफ़ उठाने को तैयार है कि किसी दूसरे को तक्लीफ़ न पहुँचे?

तीसरी सिफ़त आयते शरीफ़ा में अंसार की यह बयान की कि मुहाजिरीन को अगर ग़नीमत वग़ैरह में से कहीं से कुछ मिलता है तो इससे अंसार को दिलतंगी या रश्क नहीं होता और हसन बसरी रह॰ कहते हैं कि इसका मतलब यह है कि मुहाजिरीन को अंसार पर जो उमूमी फ़ज़ीलत दी गयी उससे अंसार को गरानी नहीं हुई। *(दुर्रे मंसूर)*

चौथी सिफ़त यह बयान की गयी है कि वे बावजूद अपनी एहतियाज

और फ़ाक़ा के दूसरों को अपने ऊपर तर्जीह देते हैं। इसके वाक़िआत बहुत कसरत से उनकी ज़िंदगी की तारीख़ में मिलते हैं। जिनमें से कुछ वाक़िआत मैं अपने रिसाले 'हिकायाते सहाबा रज़ि॰' के बाब 'ईसार व हमदर्दी' में लिख चुका हूँ। मिन्जुम्ला उनके वह मशहूर वाक़िआ भी है जो इस आयते शरीफ़ा के शाने नुज़ूल में ज़िक्र किया जाता है कि एक साहब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और भूख की और तंगी की शिकायत की। हुज़ूर सल्ल॰ ने अपनी बीवियों के घरों में आदमी भेजा मगर कहीं भी कुछ खाने को न मिला तो हुज़ूर सल्ल॰ ने बाहर मर्दों से इर्शाद फ़रमाया कि कोई साहब ऐसे हैं जो इनकी मेहमानी क़ुबूल करें। एक अंसारी, जिन का नाम मुबारक कुछ रिवायात में अबू तल्हा रज़ि॰ आया उनको अपने घर ले गये और अपनी बीवी से कहा कि यह हुज़ूर सल्ल॰ के मेहमान हैं इनकी खूब ख़ातिर करना और घर में कोई चीज़ इनसे बचा कर न रखना। बीवी ने कहा कि घर में तो सिर्फ़ बच्चों के लिए कुछ खाने को रखा है और कुछ भी नहीं है। हज़रत अबू तल्हा रज़ि॰ ने फ़रमाया कि बच्चों को बहला कर सुला दो और जब हम खाना लेकर मेहमान के साथ बैठें तो तुम चिराग़ को दुरूस्त करने के लिए उठकर उसको बुझा देना ताकि हम न खाएं और मेहमान खा लें। चुनांचे बीवी ने ऐसा ही किया।

सुबह को जब हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िरी हुई तो हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू को इन मियां बीवी का तर्ज़ बहुत पसंद आया और यह आयते शरीफ़ा इनकी शान में नाज़िल हुई। *(दुर्रे मंसूर)*

अहादीस के सिलसिले में नं॰ 13 पर एक हदीस शरीफ़ इस आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर के तौर पर आ रही है। इसके बाद अल्लाह जल्ल शानुहू का पाक इर्शाद है कि जो शख़्स अपनी तबीअत के शुह्ह (लालच) से बचा दिया जाए वही लोग फ़लाह को पहुँचने वाले हैं। शुह्ह का तर्जुमा तब्आी हिर्स व बुख़्ल है यानि तब्आी तक़ाज़ा बुख़्ल का हो चाहे अमल से बुख़्ल न हो। इसलिए उलमा से इसकी तफ़्सीर में मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ नक़ल किये गए। हिर्स और लालच से उसको ताबीर करना सही है जो अपने माल में भी होता है, दूसरे के माल में भी होता है।

एक शख़्स हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मैं तो हलाक हो गया। उन्होंने इर्शाद फ़रमाया कि क्यों? वह कहने लगे कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने इर्शाद फ़रमाया कि जो लोग शुह्ह से बचाए जाएं वही फ़लाह को पहुँचने वाले हैं और मुझ में यह मर्ज़ पाया जाता

है। मेरा दिल नहीं चाहता कि मेरे पास से कोई भी चीज़ निकल जाए। हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि॰ ने फ़रमाया कि यह शुह्ह नहीं है यह बुख़्ल है, अगरचे बुख़्ल भी अच्छी चीज़ नहीं है लेकिन शुह्ह यह है कि दूसरों का माल ज़ुल्म से खावे।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ से भी इसके क़रीब ही नक़ल किया गया। वह फ़रमाते हैं कि शुह्ह यह नहीं है कि आदमी अपने माल को ख़र्च करने से रोक ले, यह तो बुख़्ल हुआ और यह भी बहुत बुरी चीज़ है लेकिन शुह्ह यह है कि दूसरे की चीज़ पर निगाह पड़ने लगे।

हज़रत ताऊस रह॰ कहते हैं बुख़्ल यह है कि आदमी अपने माल को ख़र्च न करे और शुह्ह यह है कि दूसरे के माल में बुख़्ल करे यानी कोई दूसरा ख़र्च करे उससे भी दिल में तंगी होती हो।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि शुह्ह बुख़्ल से ज़्यादा सख़्त है इसलिए कि बख़ील तो अपने माल को रोकता है और बस, और शहीह् अपने माल को भी रोकता है और यह भी चाहता है कि दूसरों के पास जो कुछ है वह भी उसके पास आ जाए।

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया गया कि जिस शख़्स में तीन ख़स्लतें हों वह शुह्ह से बरी है -

1. माल की ज़कात अदा करता हो,
2. मेहमानों की मेहमानदारी करता हो, और
3. लोगों की मुसीबतों में मदद करता हो।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद आया है कि इस्लाम को कोई चीज़ ऐसा नहीं मिटाती जैसा कि शुह्ह मिटाता है।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया गया है कि अल्लाह के रास्ते का ग़ुबार और जहन्नम का धुआं ये दोनों चीज़ें किसी एक शख़्स के पेट में जमा नहीं हो सकतीं और ईमान और शुह्ह किसी एक के दिल में कभी जमा नहीं हो सकते।

एक हदीस में हज़रत जाबिर रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि ज़ुल्म से बचो इसलिए कि ज़ुल्म क़ियामत में तेह बतेह अंधेरा होगा (यानी ऐसा सख़्त अंधेरा पैदा करेगा कि अंधेरे की तह पर तह जम जाएगी) और अपने आप को शुह्ह से बचाओ कि उसने तुमसे पहले लोगों को हलाक किया कि इसी वजह से उन लोगों ने दूसरे लोगों के खून बहाए

और इसी की वजह से अपनी मेहरम औरतों से ज़िना किया।

हज़रत अबू हुरैरह० रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि अपने आपको शुह्ह और बुख़्ल से बचाओ कि उसने तुमसे पहले लोगों को क़त-ए-रहमी पर डाल दिया और उनको अपने मेहरमों से ज़िना करने पर डाल दिया और उनको खून बहाने पर डाल दिया यानी अगर आदमी अजनबी औरत से ज़िना करे तो उसे कुछ देना पड़े और बेटी से ज़िना करे तो मुफ़्त ही में काम चल जाए और माल की वजह से लूट मार तो ज़ाहिर है।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक शख़्स का इंतिक़ाल हुआ तो लोग कहने लगे कि यह जन्नती आदमी था। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया तुम्हें इसके सारे हालात का क्या इल्म है? क्या बईद है कि कभी उसने ऐसी बात ज़बान से निकाली हो जो बेकार हो या ऐसी चीज़ में बुख़्ल किया हो जो उसको नफ़ा न पहुँचाती हो

दूसरी हदीस में यह क़िस्सा इस तरह नक़ल किया गया कि उहद की लड़ाई में एक साहब शहीद हो गये। एक औरत उनके पास आयी और कहने लगी, बेटा तुझे शहादत मुबारक हो। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया तुम्हें इसकी क्या ख़बर है कि इसने कभी कोई बेकार बात ज़ुबान से नहीं कही हो या ऐसी चीज़ में बुख़्ल किया हो, जो उसकी ज़रूरत की न हो। *(दुर्रे मंसूर)*

कि ऐसी मामूली चीज़ में बुख़्ल करना भी हिर्स और लालच की इन्तिहा होता है। वरना मामूली चीज़ें जिनमें अपना नुक़्सान न हो, बुख़्ल के क़ाबिल नहीं होतीं।

(२९) يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ○ وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَآ اَخَّرْتَنِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ○ وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ (منافقون ع ۲)

29. ऐ ईमान वालो ! तुम को तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दें और जो ऐसा करेगा, ऐसे ही लोग ख़सारा वाले हैं और जो कुछ हमने तुमको दिया है उसमें से इससे पहले

पहले ख़र्च कर लो कि तुममें से किसी को मौत आ जाए और वह कहने लगे, ऐ मेरे रब! मुझको थोड़े दिन की मुहलत और क्यों न दे दी कि मैं ख़ैरात कर देता और नेक लोगों में हो जाता और अल्लाह जल्ल शानुहू किसी शख़्स को भी जब उसकी मौत का वक़्त आ जाए हरगिज़ मोहलत नहीं देता और अल्लाह तआला को तुम्हारे सब कामों की ख़बर है।

(मुनाफ़िक़ून रूकूअ् 2)

फ़ायदा:- माल व मताअ् की मश्ग़ूली, अह्ल व अयाल की मश्ग़ूली ऐसी चीज़ें हैं। जो अल्लाह जल्ल शानुहू के अह्कामात की तामील में कोताही का सबब बनती हैं। लेकिन यह बात यक़ीनी और तै है कि मौत के वक़्त का किसी को हाल मालूम नहीं है कि कब आ जाए, उस वक़्त अलावा हसरत और अफ़सोस के कुछ भी न हो सकेगा और देखती आंखों अह्ल व अयाल, माल व मताअ् सब को छोड़कर चल देना होगा। आज मोहलत है जो करना है कर लो -

रंगा ले न चुनरी, गुंधा ले न सर,
तू क्या क्या करेगी अरी दिन के दिन !
न जाने बुला ले पिया किस घड़ी,
तू देखा करेगी खड़ी दिन के दिन !

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि जिस शख़्स के पास इतना माल हो कि हज कर सके, उस पर ज़कात वाजिब हो और अदा न करे तो वह मरने के वक़्त दुनिया में वापस लौटने की तमन्ना करेगा। किसी शख़्स ने इब्ने अब्बास रज़ि॰ से कहा कि दुनिया में लौटने की तमन्ना काफ़िर करते हैं मुसलमान नहीं करते। तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ ने यह आयते शरीफ़ा तिलावत की कि इसमें मुसलमानों ही के मुताल्लिक़ अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया है।

एक दूसरी हदीस में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि इस आयते शरीफ़ा में मोमिन आदमी का ज़िक्र है। जब उसकी मौत आ जाती है और उसके पास इतना माल हो जिस पर ज़कात वाजिब हो और ज़कात अदा न की हो या उस पर हज फ़र्ज़ हो गया हो और हज अदा न किया हो या कोई और हक़ अल्लाह जल्ल शानुहू के हुक़ूक़ में से अदा न किया हो तो वह मरने के वक़्त दुनिया में वापसी की तमन्ना करेगा ताकि ज़कात और सद्क़ात अदा

करे। लेकिन अल्लाह जल्ल शानुहू का पाक इर्शाद है कि जिसका वक़्त आ जाए वह हरगिज़ मुअख़्ख़र नहीं होता। (दुर्रे मंसूर)

क़ुरआन पाक में बार बार इस पर तंबीह की गयी है कि मौत का वक़्त हर शख़्स के लिए एक तै शुदा वक़्त है। इसमें ज़रा सी भी तक़्दीम या ताख़ीर[1] नहीं हो सकती। आदमी सोचता रहता है कि फ़लां चीज़ को सदक़ा करूँगा, फ़लां चीज़ को वक़्फ़ करूँगा, फ़लां फ़लां के नाम वसीयत लिखूँगा, मगर वह अपने सोच और फ़िक्र में ही रहता है। उधर से एक दम बिजली के तार का बटन दबा दिया जाता है और यह चलते चलते मर जाता है। बैठे बैठे मर जाता है, सोते सोते मर जाता है। इसलिए तज्वीज़ों और मश्वरों में हरगिज़ ऐसे कामों में ताख़ीर न करना चाहिये जितना जल्द हो सके अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने में अल्लाह के यहां जमा कर देने में जल्दी करना चाहिये। वल्लाहुल् मुवफ़्फ़िक़०। (अल्लाह ही तौफ़ीक़ देने वाला है।)

(۳۰) يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ج وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ط اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ○ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰهُمْ اَنْفُسَهُمْ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ○ لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ط اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ○ (حشر ع ۳)

30. ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरते रहो और हर शख़्स यह ग़ौर कर ले कि उसने कल (क़ियामत) के दिन के वास्ते क्या चीज़ आगे भेज दी है। अल्लाह से डरते रहो। बेशक अल्लाह तआला को तुम्हारे आमाल की सब ख़बर है और उन लोगों की तरह से मत बनो जिन्होंने अल्लाह तआला को भुला दिया। (पस उसकी सज़ा में) अल्लाह तआला ने ख़ुद उनको उनकी जान से भुला दिया। यही लोग फ़ासिक़ हैं और याद रखो कि जन्नत वाले और जहन्नम वाले बराबर नहीं हो सकते। जन्नत वाले ही कामियाब हैं (हक़ीक़ी कामियाबी सिर्फ़ जन्नत वालों ही की है।)

(हश्र, रूकूअ् 3)

फ़ायदाः- अल्लाह जल्ल शानुहू ने उनको उनकी जान से भुला दिया

1. पहले या बाद में होना।

का यह मतलब है कि उनकी ऐसी अक़्ल मार दी गयी कि वे अपने नफ़ा नुक़्सान को भी नहीं समझते और जो चीज़ें उनको हलाक करने वाली हैं उनको इख़्तियार करते हैं।

हज़रत जरीर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं दोपहर के वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर था कि क़बीला मुज़र की एक जमाअत हाज़िर हुई जो नंगे पांव, नंगे बदन, भूखे थे। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब उन पर फ़ाक़े की हालत देखी तो हुज़ूर सल्ल० का चेहरा-ए-अन्वर मुतग़य्यर हो गया। उठकर अंदर मकान में तशरीफ़ ले गये। (ग़ालिबन घर में कोई चीज़ उनके क़ाबिल तलाश करने के लिए तशरीफ़ ले गये होंगे) फिर बाहर मस्जिद में तशरीफ़ लाए, हज़रत बिलाल रज़ि० से अज़ान कहने का हुक्म फ़रमाया और ज़ोहर की नमाज़ पढ़ी। उसके बाद मिंबर पर तशरीफ़ ले गये और हम्द व सना के बाद क़ुरआन पाक की कुछ आयात तिलावत कीं जिनमें ये आयात भी थीं, जो ऊपर लिखी गयीं। फिर हुज़ूर सल्ल० ने सदक़ा करने का हुक्म फ़रमाया और यह इर्शाद फ़रमाया कि सदक़ा करो, इससे पहले कि सदक़ा न कर सको। सदक़ा करो, इससे पहले कि तुम सदक़ा करने से आजिज़ हो जाओ, कोई शख़्स जो भी दे सके, दीनार दे सके, दिरम दे सके, कपड़ा दे सके, गेहूँ दे सके, जौ दे सके, खजूर दे सके, यहां तक कि खजूर का टुकड़ा ही दे सके, वह दे दे। एक अंसारी उठे और एक थैला भरा हुआ लाए जो उनसे उठता भी न था। हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पेश किया। हुज़ूर सल्ल० का चेहरा-ए-अन्वर खुशी से चमकने लगा। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जो शख़्स बेहतर तरीक़ा जारी करे उसको उसका भी सवाब है। और जो उस पर अमल करेंगे उनका भी सवाब उसको होगा, इस तरह पर कि अमल करने वालों के सवाब में कुछ कमी न होगी और इसी तरह अगर कोई शख़्स कोई बुरा तरीक़ा जारी करता है तो उसका गुनाह तो उसको होगा ही जितने आदमी उस पर अमल करेंगे उन सब का गुनाह भी उसको होगा। इस तरह से कि उनके गुनाहों के वबाल में कुछ कमी न होगी।

इसके बाद सब लोग मुतफ़र्रिक़ होकर चले गये, कोई दीनार (अशर्फ़ी) लाया, कोई दिरहम लाया, कोई ग़ल्ला लाया, ग़रज़ ग़ल्ला और कपड़े के दो ढेर हुज़ूर सल्ल० के क़रीब जमा हो गये और हुज़ूर सल्ल० ने वह सब क़बीला मुज़र के आने वालों पर तक़्सीम कर दिये। *(नसई, दुर्रे मंसूर)*

एक हदीस में आया है लोगो ! अपने लिए कुछ आगे भेज दो। अनक़रीब

वह ज़माना आने वाला है जबकि हक़ तआला शानुहू का इर्शाद ऐसी हालत में कि न कोई वास्ता दर्मियान में होगा, न कोई पर्दा दर्मियान में होगा। यह होगा, क्या तेरे पास रसूल नहीं आए जिन्होंने तुझे अह्काम पहुँचा दिये हों ? क्या मैं ने तुझको माल अता नहीं किया था ? क्या मैं ने तुझे ज़रूरत से ज़्यादा नहीं दिया था ? तूने अपने लिए क्या चीज़ आगे भेजी ? वह शख़्स इधर उधर देखेगा कुछ नज़र न आएगा, आंखों के सामने जहन्नम होगी। पस जो शख़्स उससे बच सकता हो बचने की कोशिश करे, चाहे खजूर के एक टुकड़े ही से क्यों न हो। (कन्ज़)

बड़ा सख्त मंज़र होगा, बड़ा सख़्त मुतालबा होगा, दहकती हुई, दोज़ख़ सामने होगी और हर आन उसमें फेंक दिए जाने का अंदेशा होगा। उस वक़्त अफ़सोस होगा कि हमने दुनिया में सब कुछ क्यों न ख़र्च कर दिया। आज फ़र्ज़ी ज़रूरतों से हम ख़र्च करने से हाथ खींचते हैं। लेकिन अगर आज आंख बंद हो जाए तो सारी ज़रूरतें ख़त्म हो जाएंगी और एक सख़्त ज़रूरत जहन्नम से बचने की सर पर मौजूद रहेगी।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने एक मर्तबा ख़ुत्बे में फ़रमाया कि यह बात अच्छी तरह जान लो कि तुम लोग सुबह से शाम ऐसी मुद्दत में चलते हो जिसका हाल तुमसे पोशीदा है कि कब वह ख़त्म हो जाए पस अगर तुमसे हो सके तो ऐसा करो कि यह मुद्दत एहतियात के साथ ख़त्म हो जाए और अल्लाह ही के इरादे से तुम ऐसा कर सकते हो। एक क़ौम ने अपने औक़ात को ऐसे उमूर में ख़र्च कर दिया, जो उनके लिए कारआमद न थे। अल्लाह जल्ल शानुहू ने तुम्हें उन जैसा होने से मना किया है और इर्शाद फ़रमाया है -

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنسَاهُمْ أَنفُسَهُمْ

"व ला तकूनू कल्लज़ी न नसुल्ला ह फ़ अन्साहुम अन्फ़ु स हुम॰"

कहां हैं तुम्हारे वे भाई, जिनको तुम जानते थे वे अपना ज़माना ख़त्म करके चले गए और उनके अमल ख़त्म हो गये और अब वे अपने अपने अमल पर पहुँच गये जैसे भी किए (अच्छे किए होंगे, तो मज़े उड़ा रहे होंगे, बुरे किए होंगे तो उनको भुगत रहे होंगे) कहां हैं वे, गुज़रे हुए ज़माने के जाबिर लोग, जिन्होंने बड़े बड़े शहर बनाए, ऊँची, ऊँची दीवारों से अपनी मुहाफ़िज़त की, अब वे पत्थरों और टीलों के नीचे पड़े हैं। यह अल्लाह का पाक कलाम है कि न इसके अजाइब ख़त्म होते हैं, न इसकी रौशनी मांद पड़ती है, इससे आज रौशनी हासिल कर लो, अंधेरे के दिन के वास्ते और इससे नसीहत पकड़ लो, अल्लाह जल्ल शानुहू ने एक क़ौम की तारीफ़ की, पस फ़रमाया -

كَانُوْا يُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرَاتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا وَّكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ (الآیۃ)

"कानू युसारिअू न फ़िल् ख़ैराति व यद् अू न-ना र-ग़-बंव्व र-ह-बंव्व कानू लना ख़ाशिअीन॰"

वे लोग नेक कामों में दौड़ते थे और हमको पुकारते थे रग़बत करते हुए और हमारे सामने आजिज़ी करने वाले थे। *(अल-अंबिया, रूकुअ् 6)*

उस कलाम में कोई ख़ूबी नहीं, जिससे अल्लाह की रिज़ा मक़्सूद न हो और उस माल में कोई भलाई नहीं जो अल्लाह के रास्ते में ख़र्च न हो और वह आदमी अच्छा नहीं जिसका हिल्म उसके गुस्से पर ग़ालिब न हो और वह आदमी बेहतर नहीं जो अल्लाह की रिज़ा के मुक़ाबले में किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह करे। *(दुर्रे मंसूर)*

(۳۱) اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ○ فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ۚ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ○ (تغابن ع۲)

31. इसके सिवा दूसरी बात नहीं कि तुम्हारे अम्वाल और तुम्हारी औलाद तुम्हारे लिए एक आज़माईश की चीज़ है (पस जो शख़्स उनमें पड़ कर भी अल्लाह को याद रखे तो) उस के लिए अल्लाह के पास बड़ा अज्र है। पस जहां तक हो सके अल्लाह से डरते रहो और उसकी बात सुनो और मानो और (अल्लाह की राह में ख़र्च करते रहा करो) यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर होगा और जो शख़्स अपने नफ़्स के शुह्ह यानी लालच से महफ़ूज़ रहा, पस यही लोग फ़लाह को पहुँचने वाले हैं

(तग़ाबुन रूकूअ् 2)

फ़ायदा:- शुह्ह बुख़्ल का आला दर्जा है जैसा कि नं॰ 28 पर गुज़र चुका। माल और औलाद के इम्तिहान की चीज़ होने का यह मतलब है कि यह बात जांचनी है कि कौन शख़्स इनमें फंसकर अल्लाह जल्ल शानुहू के अह्काम को और उसकी याद को भुला देता है और कौन शख़्स इनके बावजूद अल्लाह जल्ल शानुहू की फ़रमांबरदारी करता और उसकी याद में मश्ग़ूल रहता है और

नमूने के लिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उस्वा (नमूना) सामने है। यहां किसी के एक दो बीवियां होंगी, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नौ बीवियां थीं, औलाद भी थी, बेटे-बेटियां, नवासे सब कुछ मौजूद था। हुज़ूर सल्ल० के अलावा हज़राते सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के हालात दुनिया के सामने हैं और बहुत तफ़्सील से किताबों में मौजूद हैं।

हज़रत अनस रज़ि० की औलाद का शुमार ही मुश्किल है। एक मौक़े पर फ़रमाते हैं कि मेरी औलाद की औलाद तो अलाहिदा रही, खुद बिला वास्ता अपनी औलाद में से एक सौ पच्चीस तो दफ़्न कर चुका हूँ। *(इसाबा)*

और जो ज़िन्दा रहे वे इनके अलावा और औलाद की औलादें मज़ीद-बरआं,[1] इसके बावजूद उन हज़राते सहाबा-ए-किराम रज़ि० में शुमार है जिनसे कसरत से अहादीस नक़ल की गयीं। और जिहाद में कसरत से शिर्कत करते रहे हैं। औलाद की इतनी कसरत न तो इल्म की मशग़ूली में रूकावट हुई न जिहाद से।

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० जिस वक़्त शहीद हुए नौ बेटे, नौ बेटियां, और चार बीवियां थीं, और कई पोते बेटों से भी बड़े थे। *(बुख़ारी)*

जिनका बाप की ज़िंदगी में इंतिक़ाल हो गया, वे अलाहिदा इसके बावजूद न कभी नौकरी की न कोई और शग़ल, जिहाद में उम्र गुज़ारी।

इसी तरह और बहुत से हज़रात का हाल है कि न माल उनको दीन से रूकावट होता था और न औलाद की कसरत, और उनमें से जो लोग तिजारत पेशा थे उनके लिए तिजारत भी दीन के कामों से मानेअ् न होती थी। खुद हक़ तआला शानुहू ने उनकी तारीफ़ कुरआन पाक में फ़रमायी -

"रिजालुल्ला तुल्हीहिम तिजार-तुन०" *(सूरः नूर, रूकूअ 5)*

वे ऐसे लोग हैं जिनको ख़रीद व फ़रोख़्त अल्लाह के ज़िक्र से और नमाज़ क़ायम करने से और ज़कात अदा करने से नहीं रोकती। वे लोग ऐसे दिन से डरते हैं जिस दिन दिल और आंखें उलट पलट हो जाएंगी। और इसका अंजाम यह होगा कि हक़ तआला उनको उनके आमाल का बहुत अच्छा बदला देगा और उनको अपने फ़ज़्ल से (बदले के अलावा इनाम के तौर पर) और भी ज़्यादा देगा।

इस आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर में बहुत से आसार में यह मज़्मून ज़िक्र किया गया है कि जो लोग तिजारत करते थे, तिजारत उनको अल्लाह तआला की

---

1. यानी इनके भी अलावा।

याद से मानेअ् (रोकने वाली) न होती थी। जब अज़ान सुनते फ़ौरन अपनी अपनी दुकानें छोड़कर नमाज़ के लिए चल देते। (दुर्रे मंसूर)

(۳۲) اِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ (تغابن ع ۲)

32. अगर तुम अल्लाह जल्ल शानुहू को अच्छी तरह (यानि इख़्लास से) क़र्ज़ दोगे तो वह उसको तुम्हारे लिए बढ़ाता चला जाएगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और अल्लाह जल्ल शानुहू बड़ी क़द्र करने वाला है (कि थोड़े से अमल को भी क़ुबूल कर लेता है) और बड़ा बुर्दबार है (बड़े से बड़े गुनाह पर भी मुवाख़ज़ा में जल्दी नहीं करता) पोशीदा और ज़ाहिर आमाल का जानने वाला है, ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला है।

फ़ायदा:- आयात में 25, 26, 27, पर इस क़िस्म के मज़ामीन गुज़र चुके हैं। यह अल्लाह जल्ल शानुहू का ख़ास लुत्फ़ व करम है कि हमारी ख़ैर ख़्वाही और बन्दों पर करम की वजह से जो चीज़ें उनके लिए अहम और ज़रूरी हैं उनको बार बार ताकीद के साथ फ़रमाया जाता है और हम लोग इन आयात को बार बार पढ़ते हैं। और मुतमइन हो जाते हैं कि बहुत सवाब क़ुरआन पाक के पढ़ने का मिल गया। यह करीम का एहसान और इनआम है कि वह अपने पाक कलाम के महज़ पढ़ने पर भी सवाब अता फ़रमाये, लेकिन यह कलामे पाक महज़ पढ़ने के लिए तो नाज़िल नहीं हुआ, पढ़ने के साथ साथ उसके पाक इर्शादात पर अमल भी तो होना चाहिए। एक चीज़ को मालिकुल मुल्क, अपना आक़ा, अपना मुहसिन, अपना मुरब्बी, अपना राज़िक़ अपना ख़ालिक़ बार बार इर्शाद फ़रमाए और हम कहें कि हमने आपका इर्शाद पढ़ लिया बस काफ़ी है, यह हमारी तरफ़ से कितना सख़्त ज़ुल्म है?

(۳۳) وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ۭ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ۭ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ (مزمل ع ۲)

33. और तुम लोग नमाज़ को क़ायम रखो और ज़कात देते रहो और अल्लाह जल्ल शानुहू को क़र्ज़े हसना देते रहो और जो नेकी भी तुम

अपने लिए ज़ख़ीरा बना कर आगे भेज दोगे उसको अल्लाह जल्ल शानुहू के पास जाकर उससे बहुत बेहतर और सवाब में बढ़ा हुआ पाओगे और अल्लाह तआला से गुनाह माफ़ कराते रहो। बेशक अल्लाह जल्ल शानुहू मग़्फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है।

फ़ायदा:- उसको अल्लाह जल्ल शानुहू के पास जाकर उससे बेहतर पाने का मतलब यह है कि जो कुछ दुनिया की चीज़ें ख़रीदने में ख़र्च किया जाता है या दुन्यवी ज़रूरतों में ख़र्च किया जाता है और उसका बदला दुनिया में मिलता है, मसलन एक रूपये के दो सेर गन्दुम दुनिया में मिलते हैं, आख़िरत के बदल को इस पर क़ियास नहीं करना चाहिए बल्कि आख़िरत में जो बदल उन चीज़ों का मिलता है जो अल्लाह के रास्ते में ख़र्च की जायें वे मिक़्दार के एतिबार से भी और कैफ़ियत के लिहाज़ से भी बदरजहा ज़ायद उस बदल से होगा, जो दुनिया में उस पर मिलता है, चुनांचे आयत नं० 7 के तहत में गुज़र चुका है कि अगर तय्यिब माल से नेक नीयती के साथ एक खजूर भी सदक़ा की जाए तो हक़ तआला शानुहू उस के सवाब को उहद पहाड़ के बराबर फ़रमा देते हैं। काश ! इस क़दर ज़्यादा मुआवज़ा देने वाले करीम की हम क़द्र करते और ज़्यादा से ज़्यादा क़ीमत उसके यहां जमा करते ताकि ज़्यादा से ज़्यादा माल बड़ी सख़्त ज़रूरत के वक़्त हमको मिलता और इसके साथ ही इस आयते शरीफ़ा में अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमाते हैं कि जिस क़िस्म की नेकी भी तुम आगे भेज दोगे उसका मुआवज़ा ऐसा ही मिलेगा। रिसाला 'बरकाते ज़िक्र' में बहुत तफ़्सील से ऐसी रिवायतें गुज़र चुकी हैं। एक मर्तबा **"सुब्हानल्लाह या अल्हम्दु लिल्लाह या ला इला-ह इल्लल्लाहु या अल्लाहु अक्बर"**

कहने का सवाब अल्लाह तआला शानुहू के यहां उहद पहाड़ से ज़्यादा मिल जाता है, बशर्ते कि इख़्लास से कहा जाए और इख़्लास की शर्त आख़िरत के हर काम में है। इख़्लास बग़ैर वहां किसी चीज़ की पूछ नहीं और इसी चीज़ के पैदा करने के वास्ते बुज़ुर्गों की जूतियां सीधी करनी पड़ती हैं कि यह दौलत उनके क़दमों में पड़ने से मिलती है।

(۳۴) اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ۝ عَيْنًا يَّشْرَبُ
بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ۝ يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ
شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ۝ وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ۝
اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ۝ اِنَّا نَخَافُ مِنْ

رَبُّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ○ فَوَقٰهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰهُمْ نَضْرَةً
وَّسُرُوْرًا ○ وَجَزٰهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ○ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ
لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ○ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا
تَذْلِيْلًا ○ وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا ○
قَوَارِيْرَا مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ○ وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ○
عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ○ وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ
حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ○ وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ○ عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ
خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ ۖ وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ○ اِنَّ
هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ○ (دھر ع ۱)

34. बेशक नेक लोग (जन्नत में) ऐसे जामे शराब पियेंगे, जिनमें काफ़ूर की आमेज़िश होगी, ऐसे चश्मों से भरे जायेंगे जिनसे अल्लाह के ख़ास बन्दे पीते हैं। (इन चश्मों में यह अजीब बात होगी) कि वे जन्नती लोग इन चश्मों को जहां चाहें ले जायेंगे (यानी ये चश्मे उनके इशारों के ताबेअ् होंगे) ये ऐसे लोग हैं जो मन्नतों को पूरा करते हैं। (और इसी तरह दूसरे वाजिबात को) और ऐसे दिन से डरते हैं जिस दिन की सख़्ती फैली हुई होगी (यानी आम होगी कि हर शख़्स उस दिन कुछ न कुछ परेशानी में मुब्तला होगा) ये वे लोग हैं। जो अल्लाह तआला की मुहब्बत में खाना खिलाते हैं, मिस्कीन को और यतीम को और क़ैदी को (इसके बावजूद कि वह क़ैदी काफ़िर और लड़ाई में बर सरे पैकार होते थे) और वे लोग (अपने दिल में या ज़ुबान से) कहते हैं। कि हम तुमको सिर्फ़ अल्लाह के वास्ते खिलाते हैं, न तो हम इसका बदला चाहते हैं न शुक्रिया चाहते हैं (बल्कि इस वजह से खिलाते हैं कि हम अपने रब की तरफ़ से सख़्त और तल्ख़ दिन का (यानी क़ियामत के दिन का) ख़ौफ़ रखते हैं। पस अल्लाह जल्ल शानुहू उनको उस दिन की सख़्ती से महफ़ूज़ रखेगा और उनको ताज़गी और सुरूर अता करेगा और उनको इस पुख़्तगी के बदले में जन्नत और रेशमी लिबास अता करेगा, इस, हालत में कि वे जन्नत में मसहरियों पर तकिया लगाये बैठे होंगे, न वहां गर्मी की तपिश पावेंगे न सर्दी (बल्कि मोतदिल मौसम होगा) और दरख़्तों के साए उन लोगों पर झुके होंगे और उनके ख़ोशे उनके मुतीअ् होंगे (कि जिस वक़्त जिसको

पसंद करेंगे वह क़रीब आ जाएगा) और उनके पास (खाने पीने के लिए) चांदी के बर्तन और शीशे के आबख़ोरे लाए जायेंगे, ऐसे शीशे जो चांदी के होंगे (यानी वे शीशे बजाए कांच के चांदी के बने हुए होंगे और जो उस आलम में दुश्वार नहीं) और उनको भरने वालों ने सही अंदाज़ से भरा होगा। (कि न ज़रूरत से कम, न ज़्यादा) और वहां (काफ़ूरी शराब के अलावा) ऐसी शराब के जाम भी पिलाए जायेंगे जिनमें सोंठ की आमेज़िश होगी। (जैसा कि झंजर की बोतल में होता है) ये ऐसे चश्मे से भरे जायेंगे जिसका नाम सलसबील है। काफ़ूर ठंडा होता है और सोंठ गर्म (मक़सद यह है कि वहां मुख़्तलिफ़ुल मिज़ाज शराबें हैं।) और उसको ऐसे लड़के लेकर आते रहेंगे जो हमेशा लड़के ही रहेंगे। और ऐसे (हसीन) कि अगर तू उनको देखे तो यह गुमान करे कि ये मोती हैं जो बिखरे हुए हैं (और जो चीज़ें ऊपर ज़िक्र की गयीं यही फ़क़त नहीं बल्कि) जब तू उस जगह को देखेगा तो वहां बड़ी बड़ी नेमतें और बहुत बड़ा मुल्क नज़र आयेगा और उन लोगों पर वहां बारीक रेशम के सब्ज़ कपड़े होंगे और मोटे रेशम के भी (ग़रज़ मुख़्तलिफ़ अन्वाअ् के बेहतरीन लिबास होंगे) और हाथों में चांदी के कंगन पहनाये जायेंगे और हक़ तआला शानुहू उनको ऐसी शराब पिलायेंगे जो निहायत पाकीज़ा होगी और यह कहा जायेगा कि ये तुम्हारे आमाल का बदला है और तुमने जो कोशिश दुनिया में की थी वह क़ाबिले क़द्र है।

फ़ायदा:- इस कलामे पाक में शराब का तीन जगह ज़िक्र आया है और तीनों जगह शराब की नोइय्यत और तरीक़ा-ए-इस्तेमाल जुदा है। पहली जगह उनका खुद पीना मज़्कूर है। दूसरी जगह ख़ादिमों के पिलाने का जिक्र है और तीसरी जगह खुद रब्बुल आलमीन मालिकुल मुल्क की तरफ़ पिलाने की निस्बत है। क्या बईद है कि ये अब्रार की तीन क़िस्मों अद्ना, औसत, आला के एतिबार से हो। इन आयात में जितने फ़ज़ाइल, इक्राम और एज़ाज़ के नेक काम करने वालों के, बिल खुसूस अल्लाह की रिज़ा में खिलाने वालों के ज़िक्र किए गये हैं, अगर हममें ईमान का कमाल हुआ तो इन वायदों के बाद कौन शख़्स ऐसा हो सकता है जो हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह कोई चीज़ भी घर में अल्लाह और उसके रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम के सिवा छोड़े।

इन आयात में कई बातें क़ाबिले तवज्जोह हैं -

1. पहले चश्मों के बारे में ज़िक्र हुआ कि जन्नती लोग उन चश्मों को जहां चाहेंगे ले जायेंगे,

मुजाहिद रह० इसकी तफ़्सीर में कहते हैं कि वे लोग उन चश्मों को जहां चाहेंगे खींच लेंगे।

क़तादा रज़ि० कहते हैं कि उनके लिए काफ़ूर की आमेज़िश (मिलावट) होगी और मुश्क की मुहर उन पर लगी हुई होगी और वे उस चश्मे को जिधर को चाहेंगे उधर को उसका पानी चलने लगेगा।

इब्ने शौज़ब रह० कहते हैं कि उन लोगों के पास सोने की छड़ियां होंगी वे अपनी छड़ियों से जिस तरफ़ इशारा करेंगे उसी तरफ़ को वे नहरें चलने लगेंगी।

2. मन्नतों के पूरा करने के मुताल्लिक़ क़तादा रज़ि० से नक़ल किया गया कि अल्लाह के तमाम अहकाम को पूरा करने वाले लोग हैं। इसी वजह से शुरू में उनको अब्रार से ताबीर किया गया है।

मुजाहिद रह० कहते हैं कि इससे वे मन्नतें मुराद हैं जो अल्लाह के हक़ में की गयी हों (यानी कोई शख़्स रोज़ों की नज़्र कर ले ऐतिकाफ़ की नज़्र कर ले, इसी तरह इबादात की नज़्र कर ले।)

इक्रिमा रज़ि० कहते हैं कि शुक्राने की मन्नतें मुराद हैं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से नक़ल किया गया कि हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मैं ने यह मन्नत मान रखी थी कि मैं अपने आपको अल्लाह के वास्ते ज़िब्ह कर दूँगा। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी चीज़ में मशग़ूल थे, तवज्जोह नहीं फ़रमायी। यह साहब हुज़ूर सल्ल० के सुकूत से इजाज़त समझे और (हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ कर देने के बाद) उठे, दूर जाकर अपने आप को ज़िब्ह करने लगे। हुज़ूर सल्ल० को इसका इल्म हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया अल्लाह का शुक्र है कि उसने मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा किए जो मन्नत को पूरा करने का इस क़दर एहतिमाम करें। इसके बाद (उनको अपने ज़िब्ह करने से मना फ़रमाया और) उनसे फ़रमाया कि अपनी जान के बदले सौ ऊँट अल्लाह के नाम पर ज़िब्ह करें (इसलिए कि अपने आपको ज़िब्ह करना ना जायज़ है और जान का फ़िदया दियत में सौ ऊँट है।)

3. क़ैदियों के खिलाने से आयते शरीफ़ा में मुश्रिक क़ैदी मुराद हैं,

इसलिए कि उस ज़माने में मुश्रिक क़ैदी ही होते थे, मुसलमान क़ैदी उस वक़्त न थे और जब काफ़िरों के खिलाने पर यह सवाब है तो मुसलमान क़ैदी इसमें ब तरीक़े औला आ गये।

मुजाहिद रह० कहते हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बद्र के क़ैदियों को (जो काफ़िर थे) पकड़ कर लाए, तो सात हज़रात सहाबा-ए-किराम, हज़रत अबूबक्र रज़ि० उमर रज़ि०, अली रज़ि०, ज़ुबैर रज़ि०, अब्दुर्र हमान रज़ि०, सअद रज़ि०, अबू उबैदा रज़ि० ने उन पर ख़ास तौर से ख़र्च किया, जिस पर अंसार ने कहा कि हमने तो अल्लाह के वास्ते इनसे क़िताल किया था। तुम इतना ज़्यादा ख़र्च कर रहे हो। इस पर 'इन्नल अबरा-र' से उन्नीस आयतें इन हज़रात की तारीफ़ में नाज़िल हुईं।

हज़रत हसन रज़ि० कहते हैं कि जब ये आयतें नाज़िल हुईं उस वक़्त क़ैदी मुश्रिकीन थे।

हज़रत क़तादा रज़ि० कहते हैं कि जब अल्लाह जल्ल शानुहू ने इन आयात में क़ैदी के साथ एहसान करने का हुक्म फ़रमाया है, हालांकि उस वक़्त क़ैदी मुश्रिक थे तो मुसलमान क़ैदी का हक़ तुझ पर और भी ज़्यादा हो गया।

इब्ने जुरैज रह० कहते हैं कि उस जमाने में मुसलमान क़ैदी न थे, मुश्रिक क़ैदियों के बारे में यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनकी ख़ैर ख़्वाही का हुक्म फ़रमाते थे।

अबू रज़ीन रज़ि० कहते हैं कि मैं शक़ीक़ बिन सलमा रज़ि० के पास था। कुछ मुश्रिक क़ैदी वहां से गुज़रे तो शक़ीक़ रज़ि० ने मुझे उन पर सदक़ा करने का हुक्म दिया और यह आयते शरीफ़ा तिलावत की।

4. न इसका बदला चाहते हैं, न इसका शुक्रिया चाहते हैं का मतलब ये है कि यह हज़रात इसको भी गवारा न करते थे कि उनके एहसान का कोई बदला, चाहे शुक्रगुज़ारी और दुआ ही के क़बील से हो, उनको दुनिया में मिले। ये अपना सब कुछ आख़िरत ही में लेना चाहते थे।

हज़रत आइशा रज़ि० और हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० का मामूल नक़ल किया गया है कि जब वे किसी फ़क़ीर ज़रूरत मंद के पास कुछ भेजतीं तो क़ासिद से कहतीं कि चुपके से सुनना कि वह इस पर क्या अल्फ़ाज़ कहता है और जब क़ासिद वे अल्फ़ाज दुआ वग़ैरह के आकर नक़ल करता तो उसी

किस्म की दुआएं वे फ़क़ीर को देतीं और यह कहतीं कि उसकी दुआओं का यह बदला है ताकि हमारा सदक़ा ख़ालिस आख़िरत के वास्ते रह जाए।

हज़रत उमर रज़ि० और उनके साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० का भी इसी किस्म का मामूल नक़ल किया गया है। *(एहया)*

हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रह० का इर्शाद है कि जो शख़्स माल ख़र्च करने के वास्ते तलब करने वाले का इंतिज़ार करे, वह सख़ी नहीं। सख़ी वह है जो अल्लाह के हुक़ूक़ को खुद से उसके नेक बंदों तक पहुँचाए और उनसे शुक्रिए का उम्मीदवार न रहे। इसलिए कि उसको अल्लाह के सवाब पर कामिल यक़ीन हो। *(एहया)*

5. जन्नत के ख़ोशे उनके मुतीअ् होंगे का मतलब यह है कि वे उनकी ख़्वाहिश के ताबेअ् होंगे।

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० कहते हैं कि जन्नती लोग जन्नत के फलों को खड़े बैठे लेटे, जिस हाल में चाहेंगे खा सकेंगे।

मुजाहिद रह० कहते हैं कि वे लोग अगर खड़े होंगे तो वे फल ऊपर को हो जायेंगे और वे लोग अगर बैठेंगे तो वे झुक जायेंगे और अगर वे लेटेंगे तो वे और ज़्यादा झुक जायेंगे। दूसरी रिवायत में उनसे नक़ल किया गया कि जन्नत की ज़मीन चांदी की है और उसकी मिटी मुश्क है और उसके दरख़्तों की जड़ें सोने की हैं और उनकी टहनियां और पत्ते मोतियों के और ज़बरजद के हैं। जिनके दर्मियान फल लटके हुए हैं अगर वे खड़े हुए खाना चाहेंगे तो कोई दिक़्क़त नहीं, बैठकर या लेट कर खाना चाहेंगे तो उसके बक़द्र झुक जायेंगे।

6. चांदी के शीशों का मतलब यह है कि चांदी से ऐसे बनाए जाएंगे जैसाकि शीशा होता है।

हज़रत इब्नेअब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि अगर दुनिया में तू चांदी को लेकर इस क़दर बारीक करे कि मक्खी के पर के बराबर बारीक कर दे जब भी उसके अंदर का पानी नज़र न आयेगा। लेकिन जन्नत के आबख़ोरे चांदी के होकर शीशे की तरह साफ होंगे।

दूसरी रिवायत में है कि जन्नत की हर चीज़ का नमूना दुनिया में है, लेकिन चांदी के ऐसे आबख़ोरों का नमूना दुनिया में नहीं है।

क़तादा रज़ि० कहते हैं कि अगर सारी दुनिया के आदमी जमा होकर